SHRI MANUBHAI PATEL: Let us discuss it in the Business Advisory Committee and decide.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Now, Mr. Mathur, Calling Attention.

श्री सुरेन्द्र मोहन (उत्तर प्रदेश) : मैं सिर्फ आपका एक मिनट लूंगा । आज हिन्दुस्तान भर के बंधुआ मजदूरों की तरफ से...

श्री उपसभापति : मैं एलाउ नहीं करता । **(व्यवधान)**

श्री सुरेन्द्र मोहन : एक प्रदर्शन हो रहा है ... **(व्यवधान)**

श्री उपसभापति : मैंने कहा है मैं एलाऊ नहीं करता । श्री जगदीश प्रसाद माथुर, कालिंग अटेंशन ।

श्री जगदीश प्रसाद माथुर (उत्तर प्रदेश) : यह जब इतना जोर दे रहे है तो.... **(व्यवधान)**

श्री उपसभापति : मैंने कहा है कि आप इसे छोड़िए । अपना कालिंग अटेंशन करिये ।

CALLING ATTENTION TO A MATTER OF URGENT PUBLIC IMPORTANCE

Grim Tragedy in Quotab Minar, Delhi on 4th December, 1981, resulting in the death of several persons and injury to many others

श्री जगदीश प्रसाद माथुर (उत्तर प्रदेश) : उपसभापति जी, कुतुब मीनार, दिल्ली में 4 दिसम्बर, 1981 को हुई जिस भयंकर दुखद घटना के फलस्वरूप कई व्यक्तियों की मृत्यु हो गई तथा अन्य अनेक लोग घायल हुए, उसकी ओर शिक्षा तथा समाज कल्याण मंत्री जी का ध्यान दिलाता हूं ।

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRIES OF EDUCATION AND SOCIAL WELFARE (SHRIMATI SHEILA KAUL): Sir, it is with a very heavy and sad heart that I stand to make a statement about the tragic event that took place on Friday, the 4th December, 1981 at Qutab Minar. As soon as I came to know about the incident, I rushed to the site and also to the hospitals. I would like to share with the House whatever information I could gather, knowing your concern over this tragedy. However, as Members are aware, a judicial inquiry has already been ordered, and our effort should be not to prejudice this inquiry in any way.

On 4-12-1981 at 11.30 A.M. there were about 300 visitors inside Qutab Minar, when all of a sudden there was a power failure in the Minar. The visitors consisted of students and other members of the general public. There were three monument attendants on duty at the Minar at this point of time. Two were posted at the entrance gate and one was posted at the Balcony. The attendants on duty were persons with adequate experience of regulating entry and movement in this Monument. At this time, about 60 students from M. D. College, Nuh, Faridabad District, came to the gate. The monument attendants stopped them and requested them to wait since there was no electricity inside the monument. But the students forced their way into the Minar and started running up the stairs. The subsequent sequence of events is not quite clear. Apparently, there was panic resulting in a stampede in the dark staircase.

The Senior Conservation Assistant on duty reached the spot at 11.35 A.M. He immediately telephoned the local SHO, Flying Squad and Ambulance. The rescue operation was then immediately organised by the Departmental officials through one of the ventilators which could be reached through the scaffolding already in existence. Later, at about 12.15 P.M. the Sub-Inspector of Police from Mehrauli and the constable on duty in the Qutab

[Shrimati Sheila Kaul]

area arrived. The staff, with the help of the police and some members of the public, then took out persons through the entrance gate. The affected persons were despatched to Safdarjung Hospital and All-India Institute of Medical Sciences in private vehicles and in the ambulance. 45 persons died and about 20 were injured in this unfortunate incident.

As Members may be aware, since 1963 visitors are being allowed to go up the monument only up to the first Balcony, which is 95 ft. from the ground and there are 155 steps from the ground to this Balcony. There is a ticket system for entrance to the Minar, except on Friday, when the entry is free. This day happened to be a Friday. Entry to the Monument is regulated by permitting about 300 persons in the first instance to go in. Of this, about 40 persons can comfortably be accommodated in the Balcony and the rest would be in the process of going up and coming down the stairs single file each way. Subsequent visitors are allowed to enter the monument in batches according to the number of persons coming out of the minar. At times, people force their entry despite the efforts of the attendants to regulate it. The tragedy that happened on the 4th December was the first of its kind in the 750 years of the existence of the Minar.

Sir, the Home Minister has already announced a judicial inquiry into the incident and I am sure that all aspects of the incidents will be fully enquired into.

At this stage—I would only like to tell the House—that I am as deeply grieved as you all are. I would also like to mention that in view of this recent tragedy I have suspended entry of the public into the Minar.

श्री जगदीश प्रसाद माथुर : श्रीमन्, जैसा कि माननीय मंत्री महोदया ने कहा है, हम सब लोग इस घटना से बहुत दुखी हैं और चूंकि वह माता हैं, इसलिए उनका अधिक दुखी होना बहुत स्वाभाविक है । उन्होंने अपने वक्तव्य में कहा है कि जुडिशियल इन्क्वायरी की आज्ञा हो गई है, इसलिए उसके विषय में वे कुछ नहीं कहना चाहती हैं जिससे कि इन्क्वायरी किसी प्रकार से प्रेजुडिस हो जाय । लेकिन खेद की बात यह है कि इसमें उन्होंने ऐसी बातें कह दी हैं जो कि गलत हैं और जो इन्क्वायरी को प्रभावित कर सकती हैं । वहां से टेलीफोन के जाने और पुलिस इन्स्पेक्टर के पहुंचने का उन्होंने जो समय दिया है वह उन्होंने गलत बताया है । अखबार इस बात के साक्षी हैं कि 11.15 पर टेलीफोन किया गया । लेकिन आपने उसका उल्टा बताया है । मैं माननीय मंत्री महोदया से निवेदन करना चाहूंगा कि आप अगर यह समय न देतीं तो अच्छा होता । लेकिन आपने यह समय दे कर वास्तव में न चाह कर भी इन्क्वायरी को प्रेजुडिस कर दिया है । यू हैव गिवन रोंग टाइमिंग । मैं पूछना चाहता हूं कि वहां पर उस इलाके के एस. एच. ओ. श्री भीम सिंह कितने बजे पहुंचे ? क्या यह सही नहीं है कि वे ढाई बजे वहां पर पहुंचे ?

श्री नरसिंह नारायण पाण्डेय (उत्तर प्रदेश) : श्रीमन्, मेरा एक पाइन्ट आफ आर्डर है । किसी भी इन्क्वायरी के कुछ टर्म्स आफ रेफरेन्स होते हैं और उन टर्म्स आफ रेफरेन्स के मातहत जुडिशियल इन्क्वायरी होती है । उसमें एटेंडेंट का भी बयान होगा । जुडिशियल इन्क्वायरी के लिए जो जुडिशियल मजिस्ट्रेट एपाइन्ट हुआ है वह जांच करने के लिए स्वयं घटना-स्थल पर जाएगा और जो बातें कही गई हैं उनके संबंध में स्टेटमेंट लेगा ।

श्रीमन, इन सारी बातों का टर्म्स आफ रेफरेन्स हो गया है और जो वाक्या वहां पर हुआ है उसकी जाच हो रही है। श्रीमन मैं आपसे निवेदन करूंगा कि इस वक्त का यह बहुत ही ट्रेजिक इंसीडेन्ट है और हमारी प्रधान मंत्री महोदया, मिनिस्टर्स और गवर्नमेंट के जिम्मेदार लोग ये सब स्पाट पर गये थे और इसकी जुडीशियल इन्क्वायरी हो रही है। इसलिये मैं आपसे अनुरोध करूंगा कि आप ऐसा मत करिये कि जो उस जुडीशियल इंक्वायरी के अन्दर जो सबजेक्ट आते हों, जो फैक्टस आते हों, जिसकी जांच हो रही हो वह प्रेजुडिस हो, माननीय मंत्री महोदया के वक्तव्य से या हमारे मूवर आफ दि रेजोल्यूशन जो इस कालिंग-अटेन्शन के हैं उनके कथन से। इसलिये मेरा अनुरोध है कि इस बात का ध्यान रखते हुए इस पर बहस कराई जाय।

श्री जगदीश प्रसाद माथुर : मैं पाण्डेय जी की बात को स्वीकार करता हूं। लेकिन यह जानकारी देयूं कि एक तो इंक्वायरी सब-जुडिस नहीं है। दूसरी बात यह है कि मेरा जो कुछ कहना होगा वह गवाह के रूप में होगा, अधिकारी के रूप में नहीं होगा। हां, मंत्री जी जो कहेंगे वह अधिकारी के रूप में होगा और उन्होंने जो टाइम दे दिया वह पुलिस के आफिसर्स को कहना पड़ेगा। चाहे मंत्री जी की आज्ञा के बिना हो, जो होम मिनिस्टर हैं अथवा पुलिस के आफिसर हैं वे इनके बयान के खिलाफ नहीं जायेंगे। प्रेजुडिस हमारे कहने से कोई नहीं होगा। अगर प्रेजुडिस हो सकता है तो मंत्री महोदय से वक्तव्य से होगा। मेरी बात तो गवाह के रूप में है...

श्री उपसभापति : ठीक है, आगे बोलिये।

श्री जगदीश प्रसाद माथुर : क्योंकि मेरे कहने का किसी आफिसर पर, किसी अधिकारी पर असर पड़ने वाला नहीं है। मैंने प्रारम्भ में ही कहा है कि बड़े दुख की बात है कि मंत्री महोदया ने अपने बायानात में समय का उल्लेख किया, यह उन्होंने गलती की है। आपने पुलिस के अधिकारियों को मजबूर कर दिया है, वहां के सरकारी अधिकारियों को मजबूर कर दिया है कि वे आपकी बात को गलत न कहें। गलती की है आपने। मैं पूछना चाहता हूं कि एस० एच० ओ० भीमसिंह कितने बजे पहुंचा वहां। 2.30 बजे पहुंचा। क्यों पहुंचा? क्योंकि उसकी वहां पर क्वेरी हैं, पत्थर की खदानों में जहां वह साझीदार है वहां वह बैठा हुआ था और इस लिये वह 2.30 बजे पहुंचा। एक सिपाही वहां 12.15 बजे पहुंचा। लेकिन सवाल यह नहीं है कि कब पहुंचा, कैसे पहुंचा। सवाल दो हैं।

मंत्री महोदय ने कहा कि लड़के घुसे अंदर, बाहर चौकीदार ने कहा कि अन्दर अंधेरा है। अंधेरा पहले हुआ, गड़बड बाद में हुई या गड़बड़ पहले हुई अंधेरा बाद में हुआ यह सवाल ऐसा ही है कि जैसे कि मुर्गी पहले थी या अंडा पहले था। सवाल यह नहीं है कि कौन-सी चीज पहले हुई। आपने कहा की लाइट नहीं थी। यह उन्होंने बताया। मैं बताना चाहता हूं कि अन्दर की लाइट के अलावा दो लाइटें और होती हैं। एक है लाल लाइट ऊपर की ओर, दूसरी लाइट है जो बाहर चौकीदार की कोठरी है, उसके पास। वह लाइट जल रही थी या नहीं जल रही थी? वह जल रही थी। अगर वह जल रही थी तो यह कहना कि पावर फेल्योर हुआ, यह गलत है। वह जल रही थी इसका कहीं उल्लेख नहीं है कि वह नहीं जल रही थी। इसके बाद डेसू के अधिकारियों ने कहा

[श्री जगदीश प्रसाद माथूर]

कि पावर फेल्योर नहीं हुआ। पावर फेलयोर जिस पीरियड हुआ उसकी उन्होंने व्यवस्था की है। लेकिन हुआ क्या? श्रीमन्, इसकी सीढ़ियों में कई आले हैं। तो पहले आले के अन्दरलाइट आफ और आन करने के स्विच हैं, तीन स्विच हैं। एक स्विच ऐसा है जिसको आफ करने से ऊपर की बत्ती बुझ जायेगी, दूसरे को आफ करने से बाहर की बत्ती बुझ जायेगी। तीसरी अन्दर की बत्ती है जिसका स्विच लोगों को पता ही नहीं लगता। किसी बाहर वाले को उसकी जानकारी नहीं है केवल जो वहां के लोग हैं उनको ही इसका पता है। तो किसने अन्दर का स्विच बुझाया? यह इन्क्वायरी की बात है? पहले स्विच बुझाया बाद में गड़बड़ हुई या पहले हुई और बाद में स्विच बुझाया, इस में कोई अन्तर नहीं पड़ता। सवाल यह है कि आखिर हुआ क्या और हुआ क्यों। हुआ क्या, इस की जानकारी अखबारों से मिल चुकी है। मेरे सामने "स्टेटस्मैन" है। शर्म से सर झुक जाता है। एक विदेशी महिला जो कि न्यूज़ीलेंड की थी उन्होंने कहा कि हम यह समझे थे कि they have been unkind to us because we are foreigners. एक विदेशी महिला जो हमारे देश में आयी थी उसके साथ यह अत्याचार किया गया। वह विदेशी है भारतीय नहीं है। It is shame for us. It is shame for us. इसकी जिम्मेदारी किस पर है? इसकी जम्मिेदारी हर उस पुलिस के आफिसर पर है जो ला एण्ड आर्डर के लिये जिम्मेदार है। विदेशी महिला कोई आकर यह कहे कि मुझे नग्न किया गया। नग्न किया गया यह अखबार में है उसका फोटो। जब वह निकली तो वह नंगी थी। किसी जवान ने, किसी आदमी ने अपनी लूंगी दे दी और लूंगी लपेट कर नंगी बस के अन्दर वह बैठी। यह उसका फोटो है। कहां थे उस वक्त आपके पुलिस वाले रोकने के लिए, मैं आपसे पूछना चाहता हूं। फिर क्या यह घटना पहले दिन की थी। जी नहीं। 15 अगस्त, 1981 का पुलिस का रिकार्ड देख लीजिये उसमें यह शिकायत है कि वहां गड़बड़ हुई। इस प्रकार की हरकतें वहां हर शुक्रवार को होती हैं। कौन करता है? कुछ मनचले लड़के जानबूझ कर करते हैं। कुछ नौजवान ऐसे हैं, मैं बड़े दुख के साथ कहता हूं, आज मुझे उन पर आरोप नहीं लगाना चाहिए जिनको वहां के नेताओं का प्रोटेक्शन प्राप्त है। हर शुक्रवार को यह होता है। हुआ क्या है? हुआ यह है कि वहां आले हैं, श्रीमन् आप भी वहां गय होंगे वहां पर आदमी के कद जितने आले हैं। इन आलों में से अन्दर रोशनी आती है। रोशनी भी उसी हिसाब से आती है। मेरा कहना यह है कि क्या उससे पहले लोग नहीं आते थे। उससे पहले भी लोग जाते थे। आज उनको क्या अन्धेरा लगने लगा, आज उनको इसलिए अन्धेरा लगने लगा, चूंकि आज सारे देश में अन्धेरा छाया हुआ है, इसलिए अन्धेरा लगने लगता है। आप ला एण्ड आर्डर को सम्भाल नहीं सकते। गुंडों को संरक्षण प्राप्त है। मैं उस पुलिस इंसपेक्टर का नाम यहां पर नहीं लूंगा जिसका कि जवान लड़का भी मारा गया है। दो लड़के और भी हैं जो मरे है वे भी पुलिस वालों के लड़के हैं। वे लड़के मर गये इसलिए मैं उनकी शिकायत नहीं करूंगा। खड़े हो गये, आले में इसलिए रोशनी बन्द हो गई। लाइट आफ कर दी। मैं पूछता हूं किसने की? श्रीमन्, लाइट आफ उसी ने की जो जानता है। श्रीमन् आप वहां चले जाइये, आप वहां ढूंढ नहीं सकते कि स्विच कहां है। क्योंकि यह लाइट

आफ हो गई, तो कहां से हो गई, मैं यह पूछना चाहता ं। उन्होंने कहा लड़के घुस गए, कैसे घु गए लेकिन श्रीमन् जानकारी उल्टी है। जो चौकीदार था वह होशियार था। उसने दरवाजा बन्द कर दिया चूंकि भी हो रही थी। लेकिन हुआ क्या। वहां ो दूसरे मोनुमेंट्स के रखवाले आदमी थे डिपार्टमेंट के आदमी थे उनमें से एक क मैं नाम लेना चाहता हूं उसका नाम है महताब तुलाधार, यह आदमी आज तक मिला नहीं है। यह आदमी वहां खड़ा हो गया, वहां पर बन्द कर के खड़ा हो गया कि नहीं अन्दर नहीं जाने दूंगा। लोगों ने कहा कि चिल्ला रहे हैं, मर रहे हैं लेकिन उसने कहा नहीं जाने दूंगा पुलिस आएगी तब जाने दूंगा। वह ड़ा हो गया। ब्यान आपका उलटा मि ा है। इसके बाद दूसरे आले तक वहां कु लोग चढ़े और लोगो को निकाला। वह पर छद ऐसा है कि जिसमें मोटा आदमी नहीं निकला सकता बच्चे निकल सकते हैं। यह एक तरफ से चौड़ा होता है और एक तरफ से पतला होता है। वहां प पुलिस नहीं पहुची। पुलिस जब वहां र पहुंची तो उस समय वहां पर कौन था? सिर्फ चार जख्मी वहां पर बाकी थे, शेष भी सफरदजंग अस्पताल में जा चुके थ। लेकिन जब आप कहते हैं पुलिस वहां स ा बारह बजे पहुंच गई तो यह झूठा ब्यान है, गलत ब्यान है। इसकी जिम्मेदारी आप पर है। मैं मंत्री महोदय पर सारी जिम्मेदारी नहीं डालता हूं। मैं जानता हूं कि मकवाणा साहब या शिक्षा मंत्री जी इस दुर्घटना को तो भगवान ही बचा सकता था लेकिन आज दुख इस बात क है कि आप झूठ बोलने पर मजबूर हैं, इन्क्वायरी को प्रजुडिस कर रहे हैं समय की गलत-ब्यानी कर के। श्रीमन्, नवभारत टाइम्स में छपा है कि एक लड़की की नंगी लाश थी, वह कहां से आ गई? कौन गुंडे हैं? क्या जो मूंह से आते हैं वे गुंडे हैं या जो दूसरे हरियाणा से आते हैं वे गुंडे हैं? यह व है जो अन्धेरिया के अन्दर रहते है। उनको पुलिस का संरक्षण है, मंत्रियों का संरक्षण है, दुख से मेरा दिल जल रहा है, इसलिये जल रहा है कि हमारे बच्चे ही नहीं मरे हमारे देश की भी अजमत को लूटा गया है। एक विदेशी महिला कहती है कि मेरे अंगों को टटोला गया? किस ने टटोला, किस की हिम्मत हुई? देश की इज्जत अजमत को बाजार में झौंक दिया। बच्चे मर गये लेकिन मेरा सवाल यह है कि क्या आगे भी ऐसी घटनाएं आप होने देगें? क्या आप पुलिस को संभाल सकते हैं अगर पुलिस को संभाल नहीं सकते तो आप दूसरा कुछ इन्तजाम करिये। मेरा कहना यह है कि जब से आप के नये पुलिस अफसर आए हैं गुंडागर्दी बढ़ती जा रही है। (व्यवधान) इसलिये मैं शिक्षा मंत्री महोदय से कहूंगा आप टाइमिंग वाली बात वापिस ले लीजिये। आप इन्क्वायरी को प्रजुडिस कर रही हैं, You are being misled. इसको आप वापिस ले लीजिये जिससे लोग आयोग के सामने हिम्मत कर के सच्ची-सच्ची बातें कह सकें और जो दोषी हैं उनको पकड़ा जा सके।

श्रीमती शीला कौल: माननीय सदस्य ने जो वक्त का जिक्र किया है और कहा कि इससे इन्क्वायरी प्रजुडिस हो जाएगी, मेरा कहना यह है कि अगर मैं टाइम का जिक्र न करती तो कहते कि टाइम बताया जाए और यदि किया है तो कहते है कि प्रजुडिस हो जाएगा। तो इसलिये मैं तो समझती हूं ... **(व्यवधान)**

श्री जगदीश प्रसाद माथुर : आप यह कह दें कि पुलिस वाले और भी बयान दें ... **(व्यवधान)** सदन में कह दीजिये।

श्रीमती शीला कौल: भाई साहब आप जरा बात करने दीजिए। मुझे भी उतना ही दुख है जितना आपके दिल में तड़पन है बल्कि शायद उससे ज्यादा मेरे दिल में होगी । लेकिन मुझे कहने दीजिए। आपने जो कहा है कि इसका टाइम नहीं देना चाहिए। अब क्योंकि जो टाइम है वही तो मैं कहूंगी। मैं अपने दिल से थोड़ी बना कर कहूंगी कि एसा हो गया, वैसा हो गया। जो मुझे बताया गया, मैं तो वहां थी नहीं, न भाई साहब वहां थे, न ये थे, न मैं थी, इनको किसी ने कुछ बता दिया और मुझे जो बताया गया वह मैंने कहा। उनको जो बताया गया वह वे कह रहे हैं। मैं यह नही कहती कि वे गलत कह रहे हैं, अब मैं यह भी नहीं कहती कि मैं गलत कह रही हूं । जो उनको बताया गया वह वे कह रहे हैं, जो बात मुझे बताई वह मैं कह रही हूं। बात असल में बड़े अफसोस की है। जो कुछ हुआ है जो बाहर की महिला हो या कोई भी महिला हो, एक महिला के संग ऐसा होता है तो यह बड़े अफसोस की बात है और हम सबको इस बात का अफसोस है... (**व्यवधान**) बात करने दीजिये ।

श्री उपसभापति: यह तो जांच हो रही है।

श्रीमती शीला कौल: यह इतनी सीरियस बात है, इतनी गंभीर बात है... (**व्यवधान**)

श्री उपसभापति: वह जांच तो हो रही है, कितना डिटेल बतायें।

श्रीमती शीला कौल: मैं यह तो नहीं कहूंगी कि वह बचारी कितनी अनक्लोथ्ड थी। वह तो मैं नहीं कह सकती हूं, मेरे मुंह से यह बातें नहीं निकल सकेंगी, लेकिन यह कि मैं समझती हूं कि जो हुआ वह ठीक नहीं था। जिन्दगी में ऐसी दुर्घटनाएं होती है जैसे कि यह हुई है। अब कुतुब के साढ़े सात सौ साल के एक्जिस्टेंस मे ऐसी बात हो गयी तो यह अफसोस की बात है और यह नही होनी चाहिये थी लेकिन अब हो गयी...

श्री सैयद अहमद हाशमी (उत्तर प्रदेश): उसमें प्वाइंट कहा गया कि... (**व्यवधान**)

श्री उपसभापति: आपको मौका है बोलने का। आप अपना मौका लीजिये, उस समय आप बोलियेगा। बीच में आप क्यों बोल रहे है, आपका नाम न होता तो आप बीच में खड़े होते।

श्रीमती शीला कौल: तो इसलिये मैंने टाइमिंग को, वक्त को जो बात कही है, जो जानकारी मुझे दी गयी वह मैंने दी।

गृह मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री योगेन्द्र मकवाणा): कुछ सवाल माननीय सदस्य ने उठाये है उनका जवाब मैं भी दूंगा।

पहली बात तो यह कि पुलिस के बारे में कहा गया कि पुलिस बहुत देर से आई। लेकिन पुलिस का जो एडमिनिस्ट्रेशन होता है तो वहां उसका सब रिकार्ड रहता है। जब भी टेलीफोन आ जाय तो उसका वहां नोट भी होता है और उसमें टाइम भी डाला जाता है। उसको कोई चेंज नही कर सकता। जब इन्क्वायरी होगी, जो इक्वायरी कमीशन है उसके टर्म्स आफ रेफरेंसेज में इन सब बातों की जांच करने के लिय कहा गया है ... (**व्यवधान**) मैं उनको पढ़ देता हूं।

The terms of reference are:

(1) to inquire into the circumstances leading to the tragedy resulting in the death of and injuries to a large number of persons on 4th December, 1981 at Qutab Minar, New Delhi;

(2) the extent of the tragedy;

(3) to fix responsibility for the mishap; and

(4) to suggest remedial measures for prevention of such incidents in future.

Now these are the terms of reference for the Judge who has to investigate into it and during the course of the investigation everything will come out, as to whether the Police reached there in time or not, as to when the police was informed and when they reached. Now, Sir, according to the record of the police, which is very clear, and which will be there before the Inquiry Commission also, the police had reached within ten minutes.

AN HON. MEMBER: At what time?

श्री उपसभापति जो टाइम पढ़ा, वही टाइम है।

SHRI DINESH GOSWAMI (Assam): Mr. Deputy Chairman, Sir, there is one thing I suggest. For the hon. Minister it is all right to come and make a statement. If he refers to the time in the House, in this House, in that case, supposing some of us feel that the time is not correct and we shall have to counter that. Then there will be a dispute about it. The question whether the police had reached in or not at the prescribed point of time, may be avoided, because later on it may be referred in the Inquiry Commission. . .

SHRI YOGENDRA MAKWANA: That is exactly what I am doing. I have not given the time. This is the shortest time which they took to reach there. I have not given the time, when they were informed and at what time they left. I said they reached within the shortest possible time and immediately after reaching

1 P.M. the spot they enquired. Sir, within 23 minutes, three police parties reached there, and within 35 minutes four police parties reached there. One came from the police station, another from the control room, and over and above there is the district officer who keeps on moving in the district, who also reached there. When the wireless message was received by the central control room, they immediately flashed another message all along the district, so that whichever vehicle receives the message can go with the officers for rescue operation. So, when they reached the spot, immediately they started the rescue operation with the help of the drivers of the tourist bus and the people there because when the first information was given, some two officers went there and then at different points of time more officers reached the place and started the rescue operation. It is not true that it was not the police who removed the bodies. Sir, they removed the bodies, and they removed them with the help of the people also because they had to take the help of the people as they were less in number at the initial stage.

Sir, the second point is also a matter of enquiry as to whether there was light or not. That is a point to be investigated by the enquiry commission. Even the Delhi Administration also has formed a committee of officers, the Chief Engineer and other officers, to investigate whether was a failure of light or not and to suggest measures also. They have already done that, and they have to submit a report within two days. So, that report will be before the enquiry commission.

Then, regarding the 15th of August incident, on which he gave more emphasis and spoke with a louder voice that on the 15th of August such an incident had occurred, Sir, on the police record there is no such complaint. The police authorities have not received any such complaint on the

[Shri Yogendra Makwana]

15th of August nor afterwards. I do not know whether the Archaeological Department has got some complaint or not, but if they had got one, they would have definitely passed it on to the police because ultimately it is the work of the police to maintain law and order, and if there is any complaint of this nature, it is the police who could investigate it. So, it appears that they also have not received such a complaint on the 15th of August nor have the police authorities received such a complaint. If there was any complaint that they are stating in this House now, why have they not informed the police on the 15th of August? If Mr. Mathur was having it, he should have informed the police instead of stating it here in louder voice. Giving information to the House and not giving it to the police does not make any sense.

श्री जगदीश प्रसाद माथुर : आपने पुलिस का रिकार्ड देखा है कि वैसे ही कह रहे है ?

SHRI YOGENDRA MAKWANA: I have said that before I came to the House I went through all the papers. I have got the inquest form also because I wanted to know the columns. I am not coming blank to the House. I have checked all the record of the police, and nowhere has the complaint been lodged on the 15th of August. It is baseless to say that there was a complaint lodged with the police on the 15th of August. He has alleged that the complaint was made to the police.

श्री जगदीश प्रसाद माथुर : रिपोर्ट की है।

SHRI JAGANNATHRAO JOSHI (Delhi): If the goondas were doing it under protection of the police, they would not have registered the complaint. *(Interruptions)*

SHRI YOGENDRA MAKWANA: If they were knowing the incident, they should have informed the police. They should have complained to the police. If the police had failed to take notice of it, they should have informed us and we would have taken action against the officials. **(*Interruptions*)** This is far from the fact and the allegations made against the police are baseless.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: This discussion will continue after lunch. I have to announce that the Minister of State for Railways, who was to make a statement, I think, just after **the Calling Attention, has been held** up at Madras, and so he would make that statement at 5-00 P.M. today.

SHRI JAGDISH PRASAD MATHUR: What about the statement by the Housing Minister?

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Let us proceed with the Calling Attention after lunch.

सदन की कार्यवाही दो बजे तक के लिए स्थगित की जाती है।

The House then adjourned for lunch at five minutes past one of the clock.

The House reassembled after lunch at three minutes past two of the clock, **Mr. Deputy Chairman** in the Chair.

MR DEPUTY CHAIRMAN: Shri Dinesh Goswami.

SHRI DINESH GOSWAMI: Mr. Deputy Chairman, Sir, it seems that we are living at the present moment under the shadow of death. Every day when we open the newspaper, reports of a large number of deaths because of accidents, train accidents, bus accidents or other accidents, come to us. And even the tragic event at Qutab Minar has been followed by another tragic happening

at Ahmedabad where more than 60 people have died. What has happened at Qutab Minar—I will not call it an accident—is undoubtedly shocking beyond words. It is shocking because probably with slight careful planning and forethought this could have been avoided. It is shocking because a majority of the victims were school-going children who came from the rural areas expecting that it would be a day of pleasure and fun for them; but they met with doom and death. Undoubtedly for what has happened in Qutab Minar the Government and the authorities shall have to share some blame. Equally I think the society has also to take serious note of certain things because unless there is a concerted effort on the part of the administration and also the society at large, these things cannot be totally prevented.

On that day as the newspaper reports say and as the statement also points out, about 300 people went in. I do not want to enquire about the number because that will come out in the judicial inquiry. But everyone knows that the Qutab staircase is a very narrow staircase. The balcony is narrow. I would like to know, therefore, whether there was any statutory regulation on the number of people who can enter into Qutab Minar at a time. And if a statutory regulation was there, what is the number given in that statutory regulation?

Sir, the hon Minister in her statement has said that there was power failure in Qutab Minar and the Home Minister in his earlier statement in the House also spoke about power failure there. But I read in the newspapers the next day that the Corporation had denied that there was any power failure in the area. This raises two questions Was there a general power failure in the area or was it that there was a sudden power failure in Qutab Minar only? And if it was a power failure in Qutab Minar itself, obviously some suspicion does arise that probably power was put out deliberately and in that case, it was undoubtedly a sinister thing which could not have been done without the collusion of the persons who were there in charge of Qutab Minar. Then the newspapers and the Statesman photo and the news items show that under cover of darkness, two foreign women—there were a large number of women—were molested. I do not want to enter into the subject matter of this controversy because that concerns the enquiry. But it pains me to see that on that very evening Mr. Balwant Singh, Deputy Commissioner of Police (South)—on that day itself denied the allegation of molestation of foreign women. This is something which we cannot approve of. After all, he ought to have remained silent on the matter; whether there was molestation or not would have been the subject-matter of an independent inquiry, judicial or otherwise. Before making such a statement he ought to have undoubtedly made personal verifications. But to say that there was no molestation, without proper enquiry, gives the impression that the authorities are not prepared to come before the inquiry with an open mind and place all the facts. The Minister of State has said that police records are kept in detail in the police registers. Those who have got something to do with criminal courts know that all records can be manipulated—and are manipulated. Therefore let us not give too much of importance to these records. After all, let us not take it as a personal question; the Government's reputation is at stake. The question is: Had everything been done so that this tragedy could not have occurred? The authorities must also try to find out what are the reasons for which the tragedy occurred.

In fact, the first report which came to the hon. Minister and which has come out in the papers is that the Qutab Minar had burst. I would like to know from the Minister, because it has come out in the papers, and it is a fact that the first report that came to him was that the Qutab Minar had burst. How is it possible that such a report could have come if people in authority had lost no time

[Shri Dinesh Goswami]

and rushed there within a very short time and gave their information?

The other point that I would like to make is regarding the degeneration of social responsibility. If people take to such acts of molesting women—and foreign women—it will have a very serious respurcussion on my hon. friend, Mr. Sharma's Ministry; if news goes out into the world that women in Indian streets are not safe, this affects the image of our country; and apart from that even in mundane, financial matters, the tourist traffic will suffer badly. And India has had a very high reputation of respect to women in the international world. Now, Sir, unfortunately, you yourself or myself or everyone of us must have felt in every walk of life, whether it is while travelling in the train or in the taxi or in a bus that there is total disrespect to authority. And if you warn somebody, "Look here! I am going to report you to the police", he replies to you with a jeer. Nobody cares for authority. This is a situation which is very dangerous to the society at large. I know that it cannot be effectively checked, there cannot be any effective solution only by the authorities; a social awareness today has become necessary and to create that social awareness, I think the entire House shall have to apply its own mind because unless we apply our own minds at this particular juncture to this problem, it cannot be checked. What has happened at Qutab Minar is happening everyday; it is happening in various walks of life. Many facts do not come to light as many do not give publicity to the experience, whether they are foreign or Indian.

Therefore, I would like to know one or two things. I would not like to ask anything which may affect or prejudice the inquiry. Firstly, is there any statutory limit to the number of persons that can enter the Qutab Minar at a time? The Minister has said about power failure. I would like to know whether there was a general power failure or there was a power failure only in Qutab Minar. I do not speak about that particular day but in Qutab on a free day the problem of law and order and the problem of safety of women appear to be there. Therefore, I would like to know how many police men were posted there?

Lastly, there has been newspaper report that when the Judge, Mr. Jagdish Chandra, went to the spot yesterday, there was none from the Archaeological Department present. This gives us the impression as if the authorities are almost on a war path with the Commission of Inquiry which is not a desirable thing. Therefore, I would like to know if anybody was present at that particular point of time and, if not, why not.

SHRIMATI SHELLA KAUL: I shall start from the last question. I was asked whether the staff was present there yesterday. Since the Calling Attention has been admitted, I wanted all the information. We wanted to get all the facts because all kinds of questions are being asked. And I was not present there when it took place. But I have to reply to all the Questions. So, I wanted to know the real facts. So, the staff were with me throughout the day.

As I said in my statement, there is regulated entry into the monument. It has been there for many, many years. Even on the day of the tragedy entry was being regulated. so, many could go to begin with. When that number comes down other could go in the same number. This is just for the safety of the whole place.

About the general power failure, I do not know. A Committee has now been formed and, therefore, I do not want to go into details. Day before yesterday it was said that power failure was there and today it has been said that it is not the right thing. I am nobody to say what happened in the Power House. The Committee is there and the facts will come out.

SHRI YOGENDRA MAKWANA: I agree with the hon. Member that

there could be manipulations. But so far as this incident is concerned, the message was given to three different places. One is the Central Control Room. There is some record. The second is the Fire Brigade. There also the record is there. The third is the concerned Police Station, Mehrauli. In all the three places it is difficult to manipulate records. However, we have already taken over the record and there cannot be any change in the record now.

Before I come to the House I also read newspapers. I asked the concerned DCP whether he has made any such statement and he has flatly denied it. He said that he has not told any pressmen about the ladies. He said he has no said it and I have no reason to disbelieve the officer.

The third thing was about the first information that Qutab was burst. The first information was like this:

"कुतुब मीनार, महरौली से स्कूल के बच्चों को किसी ने धक्का दे दिया है।"

Under this information was received by the Police Station there is some procedure. The procedure is that it has to be reduced to writing and first copies given to the officers. Without taking that copy the Sub Inspector rushed on the scooter to the place. When he came he transmitted another message. No, from the Central Control Room one also came. It is because there was also a message.

SHRI NARASINGHA PRASAD NANDA (Orissa): Who lodged the FIR?

SHRI YOGENDRA MAKWANA: That is not an FIR. This was a telephone message.

SHRI NARASINGHA PRASAD NANDA: It is not treated as an FIR?

SHRI YOGENDRA MAKWANA: It is not an FIR as such. It is only the first information. But that was a telephone message. They do not konw who gave it. They say that probably one man who has a hotel there—his name is Srivastava or something like that—has given that information. He did not enter. He was outside the compound and the compound is very big and the Qutab is 200 metres away from the main gate. The hotel is outside the gate and he probably telephoned the police and the police came. When the van came from the Central Control Room, they went inside. But the driver was in the van itself which was having a wireless set also. So, somebody told him that the Qutab had burst and many people died. So, Sir, he also sent a message immediately without getting it confirmed. He was outside the compound, that is, outside the gate. So, from there he transmitted the message. Later on, when the officers came back, they also gave the message and that was the correct message which was that such a tragedy had taken place. So, Sir, like that there was confusion there and in that confusion only this has happened. So, Sir, there is no contradiction in this except this that, you see, this all happened due to confusion only.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Yes, Mr. Shiva Chandra Jha.

SHRI YOGENDRA MAKWANA: One minute, Sir, One point I have not clarified and that is regarding the two foreigners, the two ladies, one of whom has made a statement that they were molested. Immediately, the police tried to locate them. But it was not possible. So, they contacted the New Zealand High Commissioner and the Foreigners' Regional Registration Office. From them also they did not get the information. So, they tried to check up with the guest houses where generally such foreigners are put up and in one of such guest houses, they found, these ladies were staying, but they were not contacted. Now, they have received information that the officers went there and are recording the statements of those ladies. But the first information is that the lady refus-

[Shri Yogendra Makwana]

ed to give any statement initially and they are, you see, trying to convince her so that she can give the statement.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Yes, Mr. Shiva Chandra Jha.

श्री शिव चन्द्र झा (बिहार) : उपसभापति महोदय, यह दुर्घटना जो कुतुब मीनार की हुई है इससे हम लोग चिन्तित हैं, यह बात सर्वविदित है। लेकिन मंत्री महोदया ने जो स्टेटमेंट दिया है उसमें जो आखिरी सैन्टेन्स है, उससे अधिक दुख बढ़ जाता है। वह कहती हैं—

"In view of this recent tragedy, I have suspended the entry of the public into the Minar."

यदि टैम्पोरेरी बात हो तब तो हम समझ सकते हैं, कि इतने दिन तक रोकेंगे। लेकिन परमानेन्टली हमेशा कुतुब मीनार में जाना बन्द कर दिया जाएगा, यदि ऐसा सरकार फसला करती है तो मैं साफ शब्दों में कहना चाहता हूं कि सरकार का दिवालियापन है, यह सरकार बैंक्रप्ट हो गई है और दोनों मंत्रियों को मैं कहना चाहता हूं कि जाकर प्रधान मंत्री इंदिरा गांधी से कह दें कि शिव चन्द्र झा कह रहा था कि यदि यह फैसला हुआ कि कुतुब मीनार मे इंट्री बन्द कर दी जाएगी हमेशा के लिए तो यह पंडित जवाहरलाल के दर्शन के खिलाफ है।

उपसभापति महोदय, यह जो दुर्घटना हुई इसमें बिजली फैल्यौर ही नहीं है। इसमे 5 फल्योर्स हैं। मैं आपको बताना चाहता हू। पहला है आर्कियालाजिकल डिपार्टमेंट का जिसके मातहत मौन्यूमैंट्स आती है। दूसरा है इलक्ट्रिसिटी डिपार्टमैंट का। तीसरा है स्टाफ का मैनेजमेंट/तीन ही स्टाफ वहा पर हैं यह मैं बाद में बताऊंगा। चौथा है आजकल जो रौक एण्ड रोल का सिनेमा संसार है जिसमें स्वछंदता दिखाई जाती है, आपको शायद इसका तजुर्बा नहीं है. . .

श्री उपसभापति : उन्होंने अमरीका में पढ़ा नहीं, आप तो वहां पढ़े है। . . .

श्री शिव चन्द्र झा : इसमें सिनेरामा भी है, डिस्को भी है। पांचवी और आखिरी सबों की जड़ में यह है कि सरकार का निकम्मापन। अब मैं आर्कियोलोजिकल डिपार्टमेंट के बारे में आपको बताता हूं।

श्री उपसभापति : विस्तार में मत जाइये।

श्री शिव चन्द्र झा : संक्षेप में ही बता रहा हूं। अहमदाबाद में शेकिंग टावर है। उस पर किसी का ध्यान नहीं जा रहा है। आप उस पर अगर नहीं चढ़े हैं तो चढ़ कर देख लें। जरूर आप गिरेंगे।

श्री उपसभापति . मैंने क्या गुनाह किया है।

श्री शिव चन्द्र झा : मैं चढ़ा था। मैं आपको बताता हूं कि हम बिहार और यू॰ पी॰ वाले तो आम और पीपल पर चढ़ने के अभ्यस्थ हैं। मैं जब चढ़ा था तो डर रहा था कि अब गिरा-अब गिरा। वहां पर कोई रेलिंग नहीं हैं। मैं मन में यही सोच रहा था कि कब खत्म हो, कब खत्म हो और नीचे उतरुं।

श्री उपसभापति : ईश्वर का धन्यवाद कि आप लौट आए।

श्री शिव चन्द्र झा : इस पर आर्कियोलोजिकल डिपार्टमेंट ने अभी तक कोई ध्यान नहीं दिया। इसी तरह

से पटना में गोलगरी मानुमेंट हैं । इन सीढ़ियों पर भी दुर्घटना हो सकती है। ये जितनी बातें हैं इन सब बातों को मद्दे नजर रख कर आर्कियोलोजिकल डिपार्टमेंट के पास इनकी रक्षा के लिए कोई स्कीम नहीं है। मैं मंत्री महोदय से जानना चाहता हूं कि आर्किलोजिकल डिपार्टमेंट के इन सब खामियों पर स्टीमलाइन करेंगी या नहीं ? दूसरी बात आती है पावर फेल्योर की । अखबारों में बात आ रही है। एक डिपार्टमेंट दूसरे पर फेंक रहा है, और दूसरा डिपार्टमेंट तीसरे पर फेंक रहा है और वे मंत्री महोदय पर फेंक रहे हैं। इधर मंत्री महोदय मदन पर फेंक रही हैं।

श्री उपसभापति : इंक्वायरी हो रही है।

श्री शिव चन्द्र झा : इलेक्ट्रिसिटी, की यदि बात हैं तो किसने गुल की है अगर अपने आप फ्यूज हो गई है तो क्या वहां सेल्फ जनरेटिंग इलेक्ट्रिसिटी की व्यवस्था नहीं हो सकती ? अस्पताल में ऐसी व्यवस्था है । आप कहेंगे कि अस्पताल की दूसरी बात है । मैं एक बात बताना चाहता हूं कि राजगीर में जापानियों का मठ है, Thanks to the Japanese brain, 1964-65 में इसका उद्घाटन हुआ था । उस मठ को जोड़ने के लिए उन्होंने देखा कि नीचे बहुत मेहनत करनी पड़ेगी । इसलिए उन्होंने इलेक्ट्रिक वायर के ऊपर 30 कुर्सियां जोड़ दी । उस कुर्सी पर बैठ कर लोग आते जाते हैं। मैंने घड़ी में देखा कि 7 या 8 मिनट में वे आ जाते हैं। मैंने उनसे पूछा कि अगर पावर फेल हो गई तो क्या होगा, नीचे तो बड़ा भयानक है तो उन्होंने कहा कि यहां पर सेल्फ जेनरेटिंग का है इंतजाम 5-7 मिनट तक हम देखते हैं अगर लाइट नहीं आती है तो हम सेल्फ जेनरेटिंग का प्रयोग करते हैं । मैं यह कहना चाहता हूं कि क्या ऐसी व्यवस्था यहां नहीं हो सकती ?

तीसरा सवाल स्टाफ के बारे में है । क्या वहां तीन अटेंडेंट काफी हैं? एतिहासिक मानुमेंट है । दो हजार लोग प्रतिदिन वहां आते हैं। फ़ाइडे, जुम्मे के दिन यह फ़्री भी रहता है तो और भी ज्यादा लोग आते हैं इसलिए मैं पूछना चाहता हूं कि क्या तीन अटेंडेंट से यह मैनेज हो सकता है? बाहर से भी लोग आते हैं । मालस्टेशन वगैरह भी होता है तो पुलिस का दफ्तर चाहे एक-आधा घंटे के लिए हो, 40, मिनट के लिए हो, वहां होना चाहिए। मैं यह पूछना चाहता हूं क्या वहां पर नीयर में पुलिस का दस्ता नहीं हो सकता ?

चौथी बात यह कहना चाहता हूं, हमारे साठ साहब नहीं बैठे हैं। वह बड़ा गर्व अनुभव कर रहे थे कि 'इंसाफ का तराजू' पिक्चर अच्छी है । जब यह आई तो मैं देखने गया । लेकिन थोड़ी ही देर में वहां से भाग आया । मैं पूछता हूं कि क्या यह पिक्चर देखने लायक है। इस उच्छृंखलता के ऊपर रोक लगे इस पर सरकार को सोचना चाहिए ।

पांचवी बात यह है कि यह सब सरकार के निकम्मपन की वजह से है । मीनार में दुर्घटना हुई इसलिए, मीनार में जाने के लिए सरकार ने

[श्री शिव चन्द्र झा]

रोक लगा दी। रेलों में दुर्घटनायें होती हैं तो रेल गाड़ी बंद कर दी गई। हवाई जहाज की हाई जैकिंग होती है तो प्लेन की उड़ान बंद कर देते हैं। सदन में हल्ला होता है इसलिये सदन को बंद कर दो सारा झंझट ही मिट जाएगा यह सरकार के बुनियादी निकम्मेपन की वजह से हो सकता है। सरकार इसको वैल थोट करे। अगर सरकार इसको हमेशा के लिये बंद कर रही है तो यह आपका दिवालियापन ही कहा जायेगा। मैं माननीय मंत्री महोदया को कोई दोष नहीं देता हूं। वे तो बिलकुल नई हैं और उनको तो बेमतलब का फांसी पर चढ़ाया जा रहा है। उन बेचारी को तो यह भी पता नहीं है कि दुनिया में श्रीमती इन्दिरा गांधी के अलावा कोई दूसरा भी पहले महिला प्रधान मंत्री हुआ है। इसमें उनका दोष नहीं है। मैं छोटे गृह मंत्री जी से पूछना चाहता हूं कि वे भाटगिरी न करके साफ साफ बतायें कि वे इस बार में क्या करने जा रहे हैं?

श्रीमती शीला कौल : मान्यवर, हमारे झा साहब ने अभी इस बात का जिक्र किया है कि हम कुतुब मीनार को परमानेन्टली बन्द कर रहे है। मैंने तो परमानेन्ट लफ्ज़ का इस्तेमाल नहीं किया है। मैंने तो यह कहा है कि हम इसको ससपेन्ड कर रहे हैं। इसके पीछे भावना यह है कि इस बारे में एक इन्क्वायरी बैठाई गई है, उसके मेम्बर्स या इन्क्वायरी करने वाले लोग कुतुब मीनार के अन्दर जाना चाहेंगे और देखना चाहेंगे कि यह क्या हुआ और कैसे हुआ, इसलिये उसको ससपेन्ड किया गया है।

श्री शिव चन्द्र झा : अगर ऐसा है तो आप के स्टेटमेंट में टैम्परेरी शब्द होना चाहिये था।

श्रीमती शीला कौल : जब परमानेन्ट लफ्ज़ नहीं लिखा गया है तो इसका यही मतलब है कि थोड़ी देर के लिये ससपेन्ड किया गया है। अगर परमानेन्टली बन्द करते तो परमानेन्टली लफ्ज़ लिख देते।

श्री उपसभापति : ठीक है; आपने यह बात स्पष्ट कर दी है।

श्रीमती शीला कौल : मान्यवर, ऐसा लगता है कि जब मैंने स्टेटमेंट इस बारे में किया था तो शायद माननीय सदस्य यहां पर नहीं थे। मैंने अपने स्टेटमेंट में यह कहा था कि यहां पर रेगुलेटड एन्ट्री है। पहले लोग अन्दर चले जाते हैं और जब 50 लोग बाहर आ जाते हैं तो 50 आदमियों को अन्दर भेज दिया जाता है। ज्यादा लोगों को अन्दर नहीं भेजते हैं। इस तरह से वहां पर रेगुलेटड एन्ट्री है। पिछले 750 सालों से लोग ऊपर जाते रहे हैं और नीचे आते रहे हैं। इस तरह का कोई एक्सीडेंट वहां पर नहीं हुआ है। यह पहला इत्तफाक है जब इस तरह की दुर्घटना हुई है। इसका हमें बहुत शोक है और इस बारे में हमारे दिल में बहुत तकलीफ है। हम चाहते हैं कि इस तरह की दुर्घटना दुबारा न हो। इसलिये ज्यादा अच्छा तो यह होता कि अगर माननीय सदस्य हमें अपनी राय देते कि इस संबंध में हम क्या कर सकते हैं? सिर्फ नुक्ताचीनी करने से हमें कोई मदद नहीं मिलती है। अगर आप हमें अपनी राय देते तो वह ज्यादा अच्छा होता।

श्री शिव चन्द्र झा : सेल्फ जैनरेटिंग यूनिट बनाने के लिए आप क्या कर रहे हैं?

श्रीमती शीला कौल : उसके बारे में मैंने कहा है कि एक कमेटी बैठी हुई है। बिजली वाले और डेसू वाले उसको सोच रहे हैं।

श्री उपसभापति : इन बातों का आपने जवाब दे दिया है। इनको दोहराने की जरूरत नहीं है।

श्री श्रीकान्त वर्मा (मध्य प्रदेश) : उपसभापति महोदय, शुक्रवार को कुतुब पर ऐसी दुर्घटना हो गई जिससे सारा राष्ट्र स्तब्ध रह गया लेकिन इस सवाल पर दलगत दृष्टिकोण से विचार करने से किसी नतीजे पर नहीं पहुंचा जा सकता है। छोटे-मोटे राजनीतिक फायदे तो उससे जरूर मिल जाएंगे, लेकिन उससे कोई सच्चा फायदा नहीं होगा। दुर्घटना का समाचार जैसे ही मिला, प्रधान मंत्री घटना स्थल पर गईं, गृह मंत्री वहां गये, शिक्षा मंत्री गई और दूसरे अधिकारी भी गये। अब इस प्रकार से लाशों का रोजगार करने से कोई फायदा नही होगा। बेहतर तो यही होगा कि हम इस बात पर विचार करें कि ऐसी दुर्घटना आयन्दा न हो और अगर आप चाहें तो इस विषय पर, कुतुब की ट्रेजिडी पर नहीं, बल्कि पुरातत्व पर, इन दुर्घटनाओं पर, मंदिरों पर, मूर्तियों पर और स्मारकों पर आगे विस्तृत बहस भी करा सकते हैं। लेकिन इस प्रकार की दुर्घटना से राजनैतिक दृष्टिकोण से विचार करके लाभ उठाना ठीक नहीं होगा। इसलिये मुझे इस बहस से बहुत ज्यादा निराशा हुई है। इस बहस से ज्यादा उपयोगी वह छोटी-सी सभा थी जो शुक्रवार को यहां पर हुई थी। इस बहस से ज्यादा उपयोगी वह श्रद्धांजलि थी जो कि आपके आसन पर बैठे हुए आसनाध्यक्ष जी ने दी थी। इस बहस से ज्यादा उपयोगी वह दिन था जब दोनों सदनों/की कार्यवाही स्थगित कर दी गई थी। मैं समझता हूं कि इतना काफी था। लेकिन फिर भी अगर बहस का उद्देश्य देश में एक ऐसा वातावरण पैदा करना होता जिससे कि यह दुर्घटना दोबारा न हो तो इसकी कोई उपयोगिता होती। लेकिन इसकी कोई उपयोगिता नहीं है। अच्छा तो यह होता कि हम सही तौर पर यह विचार करते कि क्यों दुर्घटना हुई, तकनीकी दृष्टि से नहीं, सिर्फ पावर फेलुअर से नहीं, रोज पावर-फेलुअर होते हैं, रोज बिजली कटती है, रोज बिजली बंद हो जाती है, लेकिन रोज दुर्घटनायें नहीं होतीं। यह क्यों हो रहा है? यह इस लिये क्योंकि इसके पीछे जहां तक मैं सोच सका, मेरे मन में इस बारे में कोई भ्रम नहीं, कि कुछ शरारती तत्व, गुंडे होते हैं जो कि स्त्रियों के साथ दुर्व्यवहार करते हैं। इस कारण यह एक सामाजिक दुर्घटना है, एक मानवीय दुर्घटना है और इसके बारे में समूचे समाज को सोचना पड़ेगा, विचार करना पड़ेगा। अगर इस पर सिर्फ सरकार विचार करेगी तो किसी नतीजे पर नही पहुंच सकते हैं। यह सिर्फ ला एंड आर्डर, शांति और व्यवस्था की समस्या नहीं है। बल्कि श्री शिव चन्द्र झा जी ने ज्यादा सही कहा है कि आज नैतिक मूल्यों में गिरावट हुई है और यह उसका नतीजा है। बिजली फेल हुई, जिन भी कारणों से हुई हो, पहले भी होती रही होगी। कुछ शरारती तत्व वहां पर होंगे जिन्होंने अपने उचक्केपन का परिचय दिया होगा, स्त्रियों को उन्होंने वहां बेइज्जत किया होगा और इससे एक हड़बड़ी वहा हुई होगी और नतीजा यह हुआ कि एक रेला आ गया और लोग पिसते हुए, घुटते हुए मौत के हवाले चले गये।

SHRI B. D. KHOBRAGADE (Maharashtra): It has been alleged this morning by some hon. Member that goonda elements there in that locality are being given protection by the police officers and the Congress (I) leaders. What has the hon. Minister to say about it? *(Interruptions)*

SHRI SHRIKANT VERMA: I am talking something different. I am saying that goonda elements were not confined to Qutab Minar only. They may be in your locality also.

SHRI B. D. KHOBRAGADE: They are being given protection by police

[Shri B. D. Khabragade]

officers and the ruling party Members. That was an allegation made this morning. (*Interruptions*).

SHRI SHRIKANT VERMA: If the police were giving protection, the problem would be simpler; just transfer a few police officers. Here the problem is complicated because the society has degenerated. What to talk of goondas, even young boys, teenagers are not ashamed of teasing women and girls in hospitals and schools. This is the real problem and as long as this problem exists, such tragedies will occur.

उपसभापति महोदय, मैं इस ट्रेजडी को, इस दुर्घटना को कम नहीं आंकता। यह एक बहुत बड़ी दुर्घटना हुई है और सरकार की जिस हद तक इसके लिये जिम्मेदारी है वह उस जिम्मेदारी को उठाने के लिये तैयार है, ऐसा शिक्षा मंत्री महोदय और गृह मंत्री महोदय के वक्तव्यों से स्पष्ट है। जिस हद तक यह अधिकारियों की जिम्मेदारी है, उस हद तक उनको दण्ड दिया जाना चाहिए, उनका तबादला किया जाना चाहिए। लेकिन समाज को भी, इस संसद को भी, इस देश को भी अपने हृदय पर हाथ रखकर सोचना पड़ेगा कि वे इस तरह की दुर्घटनाओं के लिये कहां तक जिम्मेदार हैं। जिन स्त्रियों को नंगा किया गया, जिन लोगों ने यह किया, वे अपने दिल पर हाथ रखकर पूछें कि इस दुर्घटना के लिये वे कहां तक जिम्मेदार है। उपसभापति महोदय, मैं तो समझता हूं कि यह दुर्घटना मुख्य रूप से मानवीय कमजोरियों, मानवीय पतन और अधिपतन की वजह से हुई है। लेकिन फिर भी मेरा विचार है कि पुरातत्व विभाग का पुनर्गठन किया जाना चाहिए। जितनी देखभाल इन इमारतों की होनी चाहिए वह नहीं हो रही है। इसीलिये, ऐसी अवस्था में दुर्घटनायें हो सकती है। अगर पिज़ा की मीनार और आइफिल टावर कुछ दो-चार दरवाजों को सौंप दी जायें तो वे कुछ दिनों में गिर जायेंगी। हमने पिछले 30, 35, 50, 70, 100 वर्षों में अपनी इमारतों की ओर कोई ध्यान नहीं दिया है। हम इतिहास के प्रति एक श्रद्धांजलि भले ही अर्पित कर लें, पर इतिहास से हम सरोकार का अनुभव नहीं करते। हम उसे रौंदने, कुचलने और बेचने की वस्तु समझते हैं। मूर्तियां हमारे लिये या तो पूजा की वस्तु हैं या चोरी करने की चीज है, लेकिन मूर्तियां कला की चीज नहीं है। यह हमारे समाज का पतन है। यह हमारे समाज का पतन है कि बच्चे लुड़कते हुए चले आ रहे हैं कुतुब मीनार पर और बाहर से दरवाजा बन्द कर दिया जाता है। अब यह मै नहीं जानता कि आरोप सही है या नहीं है। यह किसका पतन है? कहां तक अधिकारी इसके लिये जिम्मेदार हैं?

उपसभापति महोदय, मेरा निवेदन है कि छोटी छोटी बातों पर हम न जायं। इमरजेन्सी लाइट होगी तो भी रोशनी गुल होगी, चारों तरफ से प्रकाश होगा तो भी अंधेरा होगा। वास्तविकता तो यह है कि सरकार को पुरातत्व विभाग का पुनर्गठन करना चाहिए। अयोग्य लोगों, अनअनुभवी लोगों के हाथों से निकाल कर योग्य लोगों के हाथों में सौंपा जाना चाहिए। दरबान के हवाले कर देने से कुतुब मीनार नहीं बच सकती उसके साथ-साथ पचासों बच्चों का भी सर्वनाश होगा ही। मुझे आशा है कि शिक्षा मंत्रालय मेरे इन सुझावों पर विचार करेगा। धन्यवाद।

श्रीमती शीला कौल : मान्यवर, अभी माननीय सदस्य ने जिक्र किया है कि जो दुर्घटना हुई है उसकी एक वजह नहीं है लेकिन बहुत सारी हैं। मैं यह नहीं कहूंगी कि यह सब वजह है लेकिन एक मेरी बहुत समझ में आई है वह यह है कि समाज को किस तरीके से बनाना है और किस

तरीके से बच्चों को ट्रेनिंग देनी चाहिए। जैसे कि हमारे यहां होता आया है कि दूसरी लड़की जो है जो आप से बड़ी है वह आपकी बहन है आप से और बड़ी है तो वह आपकी माता है और यदि छोटी है तो वह आपकी बिटिया है। अगर यह नजरिया हम रखें जो कि हमेशा हमारे समाज में होता रहा है तो यह बातें जो होती है नहीं होंगी। लेकिन हमारा समाज जो है वह इस चीज से धीरे धीरे दूर हो रहा है। अब हमको यह बैठ कर सोचना चाहिए कि इसकी क्या वजह है। समाज तो सब का होता है, एक आदमी अकेला दुनिया नहीं चला सकता। हम सब को मिल कर काम करना होगा। यहां जो कहा गया कि जो मीनार है इस पर कोई इंतजाम ऐसा नहीं होता कि इसकी रिपेयर हो तो में आपको यह बताना चाहती हूं कि पिछले पांच सालों में क्या हुआ है और मैंने स्टेटमेंट में जिक्र किया था उसका मतलब यह था कि इसकी रिपेयर हो रही है, इसको दोबारा चारों तरफ से किया जा रहा है और इसका जो खर्च हर साल होता है अगर आप चाहें तो मैं कह दूं।

श्री उपसभापति : इसकी आवश्यकता नहीं है।

श्रीमती शीला कौल : मेरे पास पांच साल के आंकड़े हैं कि हम क्या कुछ खर्च कर रहे हैं। यह कहना कि देखभाल नहीं करते मोनुमेंट्स की यह बात सही नहीं है।

श्री लाडली मोहन निगम (मध्य प्रदेश) : उपसभापति महोदय, इस गम्भीर विषय में दो बातें तो निकलती ही हैं कि मामला दो तरफ की फिसलन का है। एक मामला है मनचलों की मानसिक फिसलन का और दूसरा मामला है लोगों की शारीरिक फिसलन का। लेकिन दोनों फिसलन एक ही सिक्के के दो पहलू है। मैं कुछ कहने के पहले दो तीन बातें जरूर अर्ज कर देना चाहता हूं क्या मंत्राणी जी पुरातत्व विभाग ने किस साल में क्या खर्च किया इसके आंकड़े देने को तैयार हैं? मैं आपकी ईमानदारी पर शक नही करता मैं इतना ही चाहता हूं कि वे सदन को बता दें कि पुरातत्व विभाग क्या आपके यहां सर्वांगीण विकास की उस इलाके की कुतुब मीनार के अन्दर क्या क्या तामीरी तबदीलियां हो इसके बारे में कोई योजना दी है? अगर योजना आपको मिली है तो कब मिली है, कितने रुपये की यह योजना है और अब तक क्यों नहीं पूरी हुई। 1000 करोड़ रुपये आप दिल्ली को खूबसूरत बनाने में और गुल्ली डंडे के एशियाई खेलों पर खर्च करने जा रहे हो लेकिन 15 लाख रुपये इस मीनार के अन्दर फिसली हुई, घिसी हुई और गिरी हुई सीढ़ियों को दुरुस्त करने के लिए नहीं खर्च कर सके। मेरा कहना यह है कि जब बिजली नहीं थी तब भी कुतुब मीनार देखने लोग आते थे अब बिजली फेल हुई या नहीं हुई उसकी आंकड़े बाजी आप कर सकते हैं लेकिन मेरी निश्चित राय यह है कि जिन दिनों अमूमन भीड़ होती है खास कर उन दिनों में जिन दिनों आम जनता के लिए खुला रहता है उस दिन ज्यादा सावधानी की जरूरत होती है। क्या आपके पास कोई आंकड़े हैं। और दिनों में आप पचास आदमी ऊपर जाने देते हों और जिस दिन आम जनता के लिए खुला हो उस दिन चाहे जितने चले जाएं लेकिन यह पहला मौका नहीं है लोग आते जाते रहते हैं, भीड़ होती है। अगर आप यह कहें कि टिकट लेकर गाड़ी की छत पर क्यों बैठे हो तो यह वैसी बात हुई। यह भी हो सकता है बच्चों का आकर्षण उस रोज हो क्योंकि शुक्रवार था और स्कूलों से आए होंगे। छुट्टी होने से तत्काल कुतुब-मीनार भी देख लें और उसके

[लाडली मोहन निगम]

बाद मेला भी देख लें इस वास्ते भी सब कुछ हुआ होगा । असल बात यह है कि मानसिक उदासीनता है इन चीजों के लिए, उनके साथ हमारा कोई सम्बन्ध नहीं है । मैं आपसे निश्चित कहता हूं कि आप दुर्घटनाएं रोकना चाहते हैं लेकिन एक ही तो रुक जाती । हर शुक्रवार को आप ड्यूटी लगा दीजिए कि दिल्ली के किसी मन्त्री का बेटा उस रोज वहां रहेगा और पुलिस के आई जी का बेटा भी वहां रहेगा और वे भी चढ़ा उतरा करेंगे, कभी कोई दुर्घटना नहीं होगी, यह मैं आपसे कहता हूं । समाज के जो लोग पीड़ित होते हैं । मुफ्त को देखने कौन जायेगा, जिसको कोई सुविधा और दिनों की तरह से नहीं हो सकती । तो खैर, इस वास्ते कह करके उन दिनों की सुविधा को भी छीन लिया जाय यह मैं नहीं कह रहा हूं । मेरा आपसे इतना ही निवेदन है कि पुरातत्व विभाग ने जो आपको योजना दी है, अगर नहीं दी है तो पुरातत्व विभाग से इस बात का सर्टीफिकेट ले लेंगे ।

वहां की, अन्दर की सीढ़ियां सात सौ वर्ष से चल रही हैं, सात सौ वर्ष में आदमी इतना चढ़ा है कि उसकी सीढ़ियां चिकनी नहीं हुई होंगी ; इससे एक बात तो साफ जाहिर होती है कि जो भी इन्तजाम करने वाले लोग हैं वे सारे अपनी रोटी और अपनी मस्ती के लिए हैं । अन्दर क्या हो रहा है, चलता रहता है, पता नहीं देखते हैं कि नहीं देखते हैं ? अगर ऐसी हालत है तो मैं समझता हूं कि कौन इसको सुधारेगा । अगर मैं अफसर हूं कहीं का और मैं मानूमेंट की, बिल्डिंग की हिफाजत नहीं करना चाहता, उसमें क्या हो रहा है उसके बारे में सूचना नहीं देना चाहता ? कुछ लोगों से मैंने भी पूछा है, सब लोग कहते हैं हम लोग तो सब करके दिखा सकते हैं लेकिन इस विभाग को हमेशा लोगों ने दिखावे का विभाग समझ रखा है । समझते हैं कि इस पर पैसा फिजूल खर्च होता है । इस वास्ते मैं आपसे कहता हूं कि आपके पुरातत्व विभाग में, उसके साथ इतिहास में और उसके साथ जुड़ा हुआ जो अफसरवाद है इनके बीच में कहीं कोई समन्वय नहीं है ।

उपसभापति महोदय, मैं एक चीज और कह देना चाहता हूं इसी के माध्यम से कि मन्त्रीजी की बात का मैं भरोसा करता हूं । मकवाणा जी ने कहा कि बयान रख लिये जायेंगे, टेप कर लिये जायेंगे । लेकिन एक बात याद रखिये, यह जो आपकी न्यायिक जांच बैठी है, उन दिनों जिन लोगों ने इण्टरव्यू दिया, जिनका आपने साक्ष्य दूरदर्शन वगैरह में दिया है, क्या उन साक्ष्यों को भी लिया जायेगा । उस रोज से लेकर गुजिश्ता शुक्रवार से लेकर आज तक विभिन्न अखबारों में जो कुछ बयान छपे हैं । कुछ तो लोगों के लेटर्स वेटर्स हैं एडीटर्स को और कुछ साधारण हैं, कुछ सम्पादकीय हैं, उनमें जो मुद्दे उठाये गये हैं, क्या आप उन मुद्दों को भी अपनी जांच में समाविष्ट करेंगे कि नहीं ? उनको साक्ष्य के बतौर इस्तेमाल किया जायेगा कि नहीं ? क्योंकि जब तक उपसभापति महोदय आम जनता की जो राय उसके साथ बनी है, अगर वह अदालत के समक्ष नहीं आती, जो भी आपकी अदालत है तो मैं समझता हूं कि अदालत के सामने सरकार ही अपना पक्ष दे, दूसरे न दे पायें तो यह अच्छी न्यायिक जांच नहीं होगी । तो यह दूसरी बात मैंने कही दूरदर्शन पर जिन्होंने वक्तव्य दिये, वे साक्ष्य के रूप में इस्तेमाल किये जांय । उनको बुलाइये, जिन लोगों ने इस मामले पर आपने दिल्ली के अखबारों में सम्पादकीय लिखे हैं या सम्पादकों के नाम पत्र लिखे हैं, उनको भी साक्ष्य के लिए बुलाइये ।

इसमें बहस नहीं है, आपने कह दिया टेलीफोन से सूचना दे दी गई तो एफ आई आर में मानी जायेगी या नहीं मानी जायेगी ।

मेरा आपसे इतना ही निवेदन है कि अगर घटना कहीं होती और मेरी आंखों के सामने घटना होती तो मैं टेलीफोन का सहारा लगा। तो इस मामले में पुलिस बगली मारने की कोशिश न करे। हमारे रोजनामचे में यह घटना इन्दराज नहीं की, इस वास्ते उसके समय का फायदा उठाकर जब हकीकत में रिपोर्ट एक लिखी गयी और टेलीफोन जब किया गया तो उन दोनों के अन्तराल को अलग समझा जाय, यह मैं आपसे चाहता हूं कि स्पष्ट जांच के लिए जरूरी है।

चौथी, एक आखिरी चीज कहकर खत्म करता हूं। उपसभापति महोदय, यहां के जितने सारे पुरातत्व के आपके मानुमेंट हैं, क्या आप ऐसा नहीं कर सकते--इस समय शर्माजी भी बैठे हुए हैं, जो पर्यटन के मन्त्री हैं तो सलानी मन्त्री और शिक्षा मन्त्री, दोनों बैठकर कुछ इस तरीके से बनायें कि जो सैलानी बसेज घुमाने के लिए चला करती हैं, सुबह शाम जिनका अलग अलग स्थान होता है, तो ऐसे समय जो बाहर के पर्यटक जाते हैं उनमें कहीं भीड़ न होने पाये कि एक ही वक्त में को कहीं 10 बसेज पहुंच जायें और कहीं एक भी न पहुंच पाए तो इसकी कोई योजना क्या आप बनायेंगे कि दिल्ली के जितने ऐतिहासिक स्थल हैं, उनको घुमाने के लिए वे एक दूसरे से टकरायें नहीं और एक ही समय में कहीं ज्यादा से ज्यादा लोग न पहुंच पायें। इससे आपके समय की भी बचत होगी। इस वास्ते मैं आप से एक ही बात कहना चाहता हूं... (**व्यवधान**) राजन साहब मेरी बात का जवाब उनको दे दीजिए, वे पधारे हैं .. (**व्यवधान**) उपसभापति महोदय, एक ही सबसे जरूरी चीज जो है वह यह है कि मेरा आरोप है इस सरकार पर कि उसने जानबूझकर पिछले पांच सात वर्षों से उस इलाके के विकास को, उस इमारत की अन्दरूनी मरम्मत की जो योजनाएं थीं, उनको पूरा नहीं किया। आज यदि यह घटना घटी है, जैसे यदि आग लगी है, तो कुआं खोदने निकलते हैं, इसलिए यही नहीं, बल्कि देश में जहां जहां भी कुतुबें हैं और मीनारें हैं, वहां के पुरातत्व विभाग को जितने भी सुझाव आपके पास आए हैं, उन योजनाओं को कब तक आप कार्यान्वित करेंगे ?

श्री उपसभापति : यह सुझाव तो कई लोगों का है।

श्रीमती शीला कौल : मान्यवर, निगम साहब की मैं बहुत मशकूर हूं। इन्हीं का एक वक्तव्य ऐसा है कि जिसमें इन्होंने मुझको एक सुझाव दिया है जिससे कि हमको भी मदद होगी और मुझे बड़ी खुशी है कि इस तरीके से उन्होंने इस विषय पर अपना ध्यान दिया--मैं और ज्यादा क्या कहूं।

श्री लाडली मोहन निगम : वह तो बता दिया। योजना तो बता दीजिए कम से कम।

श्री योगेन्द्र मकवाणा : योजना तो बनी नहीं है। जब बनेगी, तब ही बतायेंगी।

श्री लाडली मोहन निगम : आप पन्द्रह लाख की योजना कब पूरी करायेंगी ? कब सीढ़ियां दुरुस्त करायेंगी ? इतनी सी बात तो कह दीजिए ?

श्रीमती शीला कौल : मैंने आपसे कहा कि वह जो काम है, अभी चारों तरफ से हो रहा है। इस वक्त थोड़ा सा ससपेण्ड किया हुआ है। जब अन्दर का हो जाएगा . . (**व्यवधान**)

श्री उपसभापति : काम शुरू हो गया है।

श्री लाडली मोहन निगम : यह घटना हो गई, बीच में अब रुक जाएगा ? फिर शुरू हो जाएगा।

श्री योगेन्द्र मकवाणा : माननीय सदस्य ने पूछा है कि न्यायिक जांच में, यह जो सब बयान अखबारों में छपे हैं, उन लोगों को, जिन लोगों ने दूरदर्शन पर बयान दिया है उनको, जिन लोगों ने पत्र लिखा है, कालम लिखा है, उन सब का एविडेंस लिया जाएगा या नहीं, मैंने पहले ही जो इन्क्वायरी कमीशन की टर्म्स आफ रेफरेंस बताई है, उसमें पहला जो टर्म्स आफ रेफरेंस है to enquire into the circumstances leading to the tragedy resulting in the death of and injuries to a large number of persons on 4th December, 1981, at Qutab Minar. तो वह जो जाच करने वाले हैं, उसको तो यह सब उपयोगी होगा। इसलिए वह तो जांच कमीशन हो तय करेगा, मैं उसमें कुछ कह नहीं सकता ।

श्री उपसभापति : लेकिन जब तक यह लोग वहां जाकर बयान नहीं देंगे. (**व्यवधान**) अखबारों में छपने से कुछ नहीं होगा । They cannot take notice of all these things. बयान देना होगा ।

श्री योगेन्द्र मकवाणा : जिसको कहना है, वह तो दे। जो पढ़ा-लिखा होगा, वह तो ले लेंगे। लेकिन जिसको कहना है, वह तो जाकर बयान देगा, जाहिर है।

श्री उपसभापति : बयान उसका लिखा जाएगा।

श्री लाडली मोहन निगम : वे कह रहे है कि जो लिखा-पढ़ा है, उस पर ... (**व्यवधान**) निष्कर्ष निकालने के लिए ... (**व्यवधान**) अखबार पढ़ कर के हम यहां पर बहस करने के लिए बैठ गये ।

श्री उपसभापति : अखबार लिखने वाले वहां जाएं।

श्री लाडली मोहन निगम : अखबार की बात नहीं। मैं कुछ और कह रहा हूं। उस रोज से अब तक जो कुछ लिखा गया है, जो अखबारों में आया है, उसे खोज के लिए इस्तेमाल करेंगे कि नहीं, यह मेरा सीधा सा प्रश्न है ?

श्री उपसभापति : वह पेश नहीं करेगा, तो कैसे करेंगे।

श्री योगेन्द्र मकवाणा यह जो नोटीफिकेशन है, वह भी अखबार में छपा है और कहा गया है कि जिसके पास कुछ भी एविडेंस है, वह आ कर के बताएं, तो वह तो है ही ।

दूसरी बात उन्होंने कही कि टेलीफोन पर इनफार्मेशन मिली, उसको टाल न दें। टेलीफोन पर जो इनफार्मेशन मिली है; वही फर्स्ट इनफार्मेशन है और जैसे मिलती है, उसको वैसे ही लिखा जाता है।

श्री उपसभापति : मिस्टर धाबे, बहुत संक्षेप में कहिये ।

SHRI SHRIDHAR WASUDEO DHABE (Maharashtra): Sir, we are always brief. You always give us advice for nothing.

Mr. Deputy Chairman, Sir, it is a very unfortunate thing that, as it appears from the press reports, foreign women were molested. This is against the high traditions of our culture and our country.

SHRI YOGENDRA MAKWANA: I have already replied to that.

SHRI SHRIDHAR WASUDEO DHABE: I am not asking you, Mr. Minister.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: He is only expressing his view.

SHRI SHRIDHAR WASUDEO DHABE: The reasons are so obvious. It is the cumulative effect of the political atmosphere and other factors.

Therefore, it is very necessary to create confidence in the womanhood—because such incidents are becoming high not only here but incidents of rape, dowry-death etc. are also taking place in every part of the country—which can be prevented only by taking radical measures. The police should take strong action to maintain law and order and the rule of law should be enforced mercilessly. Sir, it is also stated that it was due to the *goonda* element that this tragedy had occurred. That is a matter for the judicial inquiry committee to find out and I quite agree with the hon. Minister that anybody who wants to give evidence can go there and give it there. There are two questions which I would like to put about this matter. It is stated by the Minister that on that day there were about 300 visitors only and after 60 persons came later on and there was a stampede. This does not seem to be correct because on the second page of her statement it is stated that the rules provide for the entry of about 300 persons in the first instance. In the press it has come that the rule is only for 100 persons and not 300 persons. If the same number was there on Friday, a tragedy of this ghastly nature cannot occur unless the rush was very great. I want to know from the Minister whether the regulation of entry is only for 100 persons or 300 persons as mentioned in the statement and whether it is a correct statement. Secondly, I find from the statement that on Fridays the entry is free to all and anybody can go. I want to know whether on that day also there was arrangement of staff or not to regulate entry, whether the same staff was there or more staff was there. If the entry is free, it requires more staff to strengthen the arrangement and restrict entry there. The other point is, power failure is the order of the day in Delhi and other places of the country. It is nothing new. But I want to know whether you have got any arrangement at present for emergency lighting at the Qutab Minar or there is no such arrangement at present. Lastly, entry regulations should be strictly enforced. Immediately this Minar should be made open to the public, but entry should be regulated properly.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: You cannot ask for both the things—to get it repaired and then have it opened.

SHRI SHRIDHAR WASUDEO DHABE: I am not saying about repairs. I am saying that entry should be restricted, even to 50 persons at a time. But it will be wrong to say that we are going to close the entry for maintenance and repairs. Repairs and maintenance can be made but the regulations for entry can be enforced so that only a small number of people can go. Therefore, I would like to know specifically on this point.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Honourable Minister, I think you have replied to all the points. If there is anything new, you may say it.

श्रीमती शीला कौल : मान्यवर, माननीय धावे जी जो बात पूछ रहे हैं उसका जवाब दे चुकी हूं ।

SHRI SHRIDHAR WASUDEO DHABE: I asked about regulation of entry, whether on Fridays it is 100 persons or 300 persons, whether the present rule provides for the entry of 100 or 300 persons.

SHRIMATI SHEILA KAUL: In the beginning if there are 300 people they can go up and then, out of those 300-odd if some people come down, say, about 100, then only a hundred will be allowed to go up. This is the regulation.

श्री सैयद ग्रहमद हाशमी: सर, यह जो कुतुब मीनार में हादसा हुग्रा है 4 दिसम्बर को, उस के ऊपर मैं ग्रपने दिले दर्द ग्रौर रंजे-गम का इजहार करता हूं। मैं सोचता हूं, सिर्फ एक मैं ही नहीं बल्कि पूरा हिन्दुस्तान इस गम में शरीक है । इसी तरीके से ग्राज की जो दूसरी खबर ग्रहमदाबाद के सिलसिले में ग्राई है,

[श्री सैयद अहमद हाशमी]

जिस में 63 आदमी शिकार हुए हैं आग से वह भी एक दर्दनाक वाक़या है।

श्री उपसभापति: वह एक अलग प्रश्न है।

श्री सैयद अहमद हाशमी: मैं एक बात यह अर्ज करना चाहता हूं मिस्टर डिपुटी चैयरमैन, कि जुडिशल इन्क्वायरी कुतुब मीनार के हादशे की शुरु हो गई है। ठीक है, हो गई है लेकिन आज तक, पूरे मुल्क में बहुत से मुतआद्दिद वाक़यात में होता यही है कि फार द टाइम बीइंग लोगों का गुस्सा दूर करने के लिये इंक्वायरी कमीशन अपोइंट कर दिया जाता है लेकिन उस के बाद जो उन की फाइंडिंग्ज़ आती है उन फाइंडिंग्ज पर अमल होता नहीं है। मैं समझता हूं, ठीक है यह जुडीशल इंन्क्वायरी हो रही है लेकिन एक बिलकुल टेक्निकल बात है, टेक्निकल इसका प्रोसीजर पूरा हो जायगा लेकिन दो-तीन चीजें इस जुडिशल इंक्वायरी में भी ग़ालिबन आएंगी और वह हैं एक तो क्या आर्कियालाजिकल डिपार्टमेन्ट ने या उसके स्टाफ ने अपनी ड्यूटी अपने फर्ज को पूरा किया। दूसरा मसला जो आता है वह यह कि डेसू का फर्ज है जो पावर की बाबत था उस ने अपनी ड्यूटी पूरी की या उस के अंदर बीच में कोई दूसरा इंटरवीन करने वाला था, कोई मदाखलतकार था जिसने स्विच आफ किया?

दूसरी चीज यह कि क्या वाक़ई सिर्फ बिजली बंद हो जाने के नतीजे में यह हादसा हुआ? मैं समझता हूं कि सिर्फ बिजली बन्द हो जाने की वजह से ही ऐसा नहीं हुआ। बात यही कहीं जाती है कि फ्राइडे को, जिस रोज फ्री एन्ट्री होती है, और दिनों के मुकाबले में जब पैसे से टिकट ले कर जाते हैं, कम स्टाफ होता है। एक तरह से यह कहा जाय कि जिस रोज पैसे मिलते हैं उस रोज प्रोटेक्शन का ज्यादा लिहाज होता है लेकिन जिस रोज फ्री एंट्री होती है उस रोज प्रोटेक्शन का इंतजाम करने की जहमत नहीं उठायी जाती, उस रोज एक आध ही स्टाफ रहता है। मैं यह भी मान लेता हूं कि फ्री एंट्री का दिन था, ट्रेड-फेयर का भी आखिरी दिन था, उस दिन देखने के लिये स्कूल के बच्चे आये, वहां से वहां गये, बहुत ज्यादा भीड़ थी। मैं कहता हूं कि अगर नार्मल सिचुएशन रहती तो बाज आती और चली जाती। भीड़ दोस्तों ने कहा कि बिजली का जमाना आज का जमाना है, लेकिन कुतुबमीनार तो सात सौ बरस से है, उस के अन्दर रोशनदान बने हुए हैं जिन से रोशनी और हवा आती है अगर बिजली चली भी जाय तो कोई खास बात नहीं। हादसे की बात यही है कि आज पिकनिक स्पाट गुंडा अनासर का मरकज बने हुए हैं और उन से कुतुब भी महफूज़ नहीं है। यह बात बिलकुल सही और यकीनी है कि कुछ समाज-दुश्मन अनासर, कुछ बैड एलीमेंट्स, कुछ गुण्डे जरूर कुतुबमीनार के अन्दर गये और उन्होंने चाहे फारेन गर्ल्स हों, या हमारे अपने वतन की बहुएं हमारी मायें और बहिनें ही लेकिन यह जरूर है कि हमारा सिर ज्यादा शर्म से झुक जाता है जब गैरमुल्की मां-बहिनों का नाम आता है--यकीन है कि उन्होंने उन के साथ शरारत की, उन्होंने उन के साथ बदमाशी की और उस के नतीजे में वह चीखीं। एक तरफ उन्होंने बिजली बुझाई या बिजली गुल हुई, दोनों शक्लों के अन्दर भगदड़ मची, बदहवासी पैदा हुई और उस बदहवासी के नतीजे के अन्दर यह हादसा हुआ। अब यहां पर एक बात मैं और भी अर्ज कर दूं। जाहिर

है कि हम आज उन मरने वालों के लिये कुछ कर नहीं सकते । हो सकता है कि मिनिस्ट्री आफ एजूकेशन उन की फैमिलीज का कुछ इमदाद करे। गालिबन 500 रुपये की फिगर आयी है ।

एक माननीय सदस्य : 5 हजार।

श्री सैयद अहमद हाशमी : होगी, लेकिन मैं यह कहना चाह रहा था कि जब कोई हादसा होता है उस वक्त हम जायजा लेते हैं, उस वक्त देखते है कि यह सही है या गलत है। मैं कहता हूं कि यह कन्वेंशन खतम होना चाहिए। हमें पहले से सावधान रहना चाहिये, पहले से होशियार रहना चाहिये कि आइंदा इस तरह की घटनाएं न घटें।

इसके साथ एक बात और जोड़ूंगा। आज अखबारों में जो रिपोर्ट है उस के मुताबिक जो जज हैं मिस्टर जगदीश चन्द्र वह मिस्टर वलवन्त सिंह, डिपुटी कमिश्नर पुलिस के साथ गये लेकिन आर्क्योलोजिकल डिपार्टमेंट का जो स्टाफ वहां होना चाहिये चौकीदार, हवलदार वे भी वहां नहीं पाये गये। यानी जुम्मा के रोज जो लोग मौका पर थे उनमें से कोई भी नहीं था।

श्री उपसभापति : उस का जवाब हो गया है।

श्री सैयद अहमद हाशमी : मैं आगे बता रहा हूं। यही नहीं बल्कि लोकल इंटेलीजेंस जो इन्वेस्टीगेट कर रहा है उस ने लोदी रोड और अरविन्द मार्ग की क्रासिंग पर रहने वाला जो स्टाफ है, जो वहां पर बूथ वगैरह लगाते हैं उन से इनक्वायरी की। मालूम होता है कि उन के मुंह को सी दिया गया है और वह कोई बात कहने के लिये तैयार नहीं है। यह सूरतेहाल बहुत तसवीसनाक है। अगर आर्क्योलोजिकल डिपार्टमेंट का कोआपरेशन किसी डर का दबाव की वजह से नहीं आता और सही फैक्ट्स और फिगर्स नहीं आते तो मैं समझता हूं कि बहुत बड़ी भूल होगी। मैं फिर कहूंगा कि यह कन्वेंशन बदलना चाहिये कि जब घटना घटे तभी हमारा मिनिस्टर कहे कि हम पूरी सिचुएशन पर गौर करेंगे।

†[**شری سید احمد ہاشمی** : سر یہ جو قطب مینار میں حادثہ ہوا ہے ۴ دسمبر کو اس کے اوپر میں اپنے دلی درد اور رنج و غم کا اظہار کرتا ہوں - میں سوچتا ہوں کہ صرف ایک میں ہی نہیں بلکہ پورا ہندوستان اس غم میں شریک ہے - اسی طریقہ سے آج کی جو دوسری خبر احمد آباد کے سلسلے میں آئی ہے جس میں ۶۳ آدمی شکار ہوئے ہیں آگ سے - وہ بھی ایک درد ناک واقعہ ہے -

شری اپسبھاپتی : وہ ایک الگ چیز ہے -

شری سید احمد ہاشمی : میں ایک بات یہ عرض کرنا چاہتا ہوں - مسٹر ڈپٹی چیئرمین کہ جوڈیشل انکوائری قطب مینار کے حادثہ کی شروع ہو گئی ہے - ٹھیک ہے ہو گئی ہے - لیکن آج تک پورے ملک میں بہت سے متعدد واقعات میں ہوتا بھی ہے کہ فار دی ٹائم بینگ لوگوں کا غصہ دور کرنے کے لئے انکوائری

†[ ]Transliteration in Persian Script.

[شری سید احمد ہاشمی]

کمیشن اپائنٹ کر دیا جاتا ہے - لیکن اس کے بعد جو ان کی فائنڈنگ آتی ہے - ان فائنڈنگز پر عمل ہوتا نہیں ہے - میں کہتا ہوں کہ ٹھیک ہے یہ جوڈیشل انکوائری ہو رہی ہے - لیکن ایک بالکل ٹیکنیکل بات ہے - ٹیکنیکل اس کا پروسیجر پورا ہو جائے گا - لیکن دو تین چیزیں اس جوڈیشل انکوائری میں بھی غالباً آئیں گی - اور وہ ہیں—ایک تو— کیا آرکیولوجیکل ڈیپارٹمینٹ نے یا اس کے اسٹاف نے اپنی ڈیوٹی - اپنے فرض کو پورا کیا - دوسرا مسئلہ جو آتا ہے وہ یہ ہے کہ ڈیسو کا فرض جو پاور کی بابت تھا اس نے اپنی ڈیوٹی پوری کی یا اس کے اندر بیچ میں کوئی دوسرا انٹرویں کرنے والا تھا - کوئی مداخلت کار تھا جس نے سوئچ آف کیا -

دوسری چیز یہ ہے کہ کیا واقعی صرف بجلی بند ہو جانے کے نتیجہ میں یہ حادثہ ہوا - میں سمجھتا ہوں کہ صرف بجلی بند ہو جانے کی وجہ سے ہی ایسا نہیں ہوا - بات یہی کہی جاتی ہے کہ فرائی ڈے کو جس روز فری اینٹری ہوتی ہے اور دنوں کے مقابلے میں جب پیسے سے ٹکٹ لیکر جاتے ہیں کم اسٹاف ہوتا ہے - ایک طرح سے یہ کہا جائے کہ جس روز پیسے ملتے ہیں اس روز پروٹیکشن کا زیادہ لحاظ ہوتا ہے - لیکن جس روز فری اینٹری ہوتی ہے اس روز پروٹیکشن کا انتظام کرنے کی زحمت نہیں اٹھائی جاتی - اس روز ایک آدھ ہی اسٹاف رہتا ہے - میں یہ بھی مان لیتا ہوں کہ فری اینٹری کا دن تھا ، ٹریڈ فیئر کا بھی آخری دن تھا - اس دن دیکھنے کے لئے اسکول کے بچے آئے ، وہاں سے وہاں گئے بہت زیادہ بھیڑ تھی - میں کہتا ہوں کہ اگر نارمل سچویشن رہتی تو بھیڑ آتی اور چلی جاتی بعض دوستوں نے کہا کہ بجلی کا زمانہ آج کا زمانہ ہے - لیکن قطب مینار تو سات سو برس سے ہے - اس کے اندر روشن دان بنے ہوئے ہیں - جس سے روشنی اور ہوا آتی ہے اگر بجلی چلی بھی جائے - تو کوئی خاص بات نہیں - حادثہ کی بات یہی ہے کہ آج پبلک اسپاٹ فتنہ عناصر کا مرکز بنے ہوئے ہیں اور ان سے قطب بھی محفوظ نہیں ہے - یہ بات بالکل صحیح اور یقینی ہے کہ کچھ سماج دشمن عناصر - کچھ بیڈ ایلیمینٹس - کچھ غنڈے ضرور قطب مینار کے اندر گئے اور انہوں نے چاہے فورن گرلز ہوں ، یا ہمارے اپنے وطن کی بہوئیں ہماری بچیاں بہنیں

ھوں - لیکن یہ ڈر ھے کہ ھمارا سر زیادہ شرم سے جھک جاتا ھے جب غیر ملکی ماں بہنوں کا ذکر آتا ھے - یقین ھے کہ انہوں نے ان کے ساتھ شرارت کی - انہوں نے ان کے ساتھ بدمعاشی کی اور اس کے نتیجہ میں وہ چیخیں - ایک طرف انہوں نے بجلی بجھائی یا بجلی گل ھوئی - دونوں شکلوں کے اندر بھگدڑ مچی - بد حواسی پیدا ھوئی اور اس بد حواسی کے نتیجہ کے اندر یہ حادثہ ھوا - اب یہاں پر ایک بات میں اور بھی عرض کر دوں - ظاہر ھے کہ ھم آج ان مرنے والوں کے لئے کچھ کر نہیں سکتے - ھو سکتا ھے کہ منسٹری آف ایجوکیشن ان کی فیملیز کی کچھ امداد کرے - غالباً پانچ سو روپئے کی فیگر آئی ھے -

ایک مانیئے سدسیہ : پانچ ہزار ھ

شری سید احمد ہاشمی : ھوگی - لیکن میں یہ کہنے جا رہا تھا کہ جب کوئی حادثہ ھوتا ھے اس وقت ھم جائزہ لیتے ھیں - اس وقت دیکھتے ھیں کہ یہ صحیح ھے یا غلط ھے - میں کہتا ھوں کہ یہ کنوینشن ختم ھونا چاھئے - ھمیں پہلے سے ساودھان رھنا چاھئے - پہلے سے ھوشیار رھنا چاھئے کہ آئندہ اس طرح کی گھٹنائیں نہ گھٹیں ۔

اس کے ساتھ ایک بات اور جوڑوں گا - آج اخباروں میں جو رپورٹ ھے اس کے مطابق جو چیف ھیں مسٹر جگدیش چندر و مسٹر بلونت سنگھ ڈپٹی کمشنر پولس کے ساتھ گئے - لیکن آرکیولوجیکل ڈپارٹمینٹ کا جو اسٹاف وھاں ھونا چاھئے چوکیدار و حولدار - وہ ابھی وھاں نہیں پائے گئے - یعنی جمعہ کے روز جو لوگ موقعہ پر تھے ان میں سے کوئی بھی نہیں تھا -

شری اپسبھا پتی : اس کا جواب ھو گیا ھے -

شری سید احمد ہاشمی : میں آگے بڑھ رھا ھوں - یہی نہیں بلکہ لوکل انٹیلی جینس جو انویسٹیگیشن کر رھا ھے اس نے لودی روڈ اور اروند مارگ کی کراسنگ پر رھنے والا جو اسٹاف ھے جو وھاں پر بوتھ وغیرہ لگاتے ھیں ان سے انکوائری کی - معلوم ھوتا ھے کہ ان کے منہ کو سی دیا گیا ھے اور وہ کوئی بات کہنے کے لئے تیار نہیں ھیں - یہ یہ صورت حال بہت تشویشناک ھے - اگر آرکیولوجیکل ڈپارٹمینٹ کا کوآپریشن کسی ڈر یا دباؤ کی وجہ سے نہیں آتا اور صحیح فیکٹس

[شری سید احمد هاشمی]

اور فیگرس نہیں آئے تو میں سمجھتا ہوں کہ بہت بڑی بھول ہوئی - میں پھر کہونگا کہ یہ کنوینشن بدللا چاھئے کہ جب کوٹا کھلے تبھی ھمارا ماسٹر کہے کہ ھم پوری سچوایشن پر غور کرینگے -]

श्री उपसभापति : इन सब बातों पर इन्क्वारी हो रही है ।

3 P. M.

श्री सैयद अहमद हाशमी : आप ही जवाब न दीजिए । आप ही जवाब देंगे मिनिस्टर क होते हुए तब हम आप को ही सुन लेंगे ।

†[شری سید احمد هاشمی : آپ ھی جواب نہ دیجئے - آپ ھی جواب دینگے منسٹر کے ھوتے ھوئے تو ھم آپ کو ھی سن لیں گے -]

श्रीमती शीला कौल : जनाब हाशमी साहब ने जो फरमाया कि अरविन्द रोड पर जो कुछ हो रहा था वह यह है कि अरविन्द रोड पर यहां का दफ्तर है । तो वहां पर जब यह हादसा हुआ तो कुछ लोग मिल कर उस के बारे में बात कर रहे थे कि देखो क्या हो गया । अफसोस की बात है । जसे यह पार्लियामेंट का दफ्तर है उसी तरह वहां दफ्तर है और उस के बाहर खड़े हो कर लोग बात कर रहे थे और कोई खास बात नहीं है ।

श्री सैयद अहमद हाशमी : मकवाणा साहब इस के बारे में कुछ नहीं फरमायेंगे ?

†[شری سید احمد هاشمی : مکوانہ صاحب تو اس کے بارے میں کچھ نہیں فرمائیں گے -]

†[ ] Transliteration in Arabic Script.

श्री उपसभापति : इससब बारे में बात तो हो रही है ।

श्री योगेन्द्र शर्मा (बिहार) : कुतुब की ट्रेजडी से जो देश और हम सब लोगों की हालत हुई है उस के बाद उम्मीद यह की जाती थी कि कुतुब मीनार को देखने वालों की रक्षा की जिम्मेदारी जिन लोगों पर है वे सिर्फ संवेदना ही प्रकट नहीं करेंगे बल्कि कुछ प्रायश्चित की भावना का भी इजहार करेंगे ताकि इस तरह की घटनायें दुहरायी न जायें और इस तरह की चीजों के होने में उन लोगों का हाथ जाने या अनजाने हो तो उस का भी प्रायश्चित हो जाय, लेकिन इस के विपरीत देखा यह जा रहा है कि सब लोग अपनी-अपनी चमड़ी बचाना चाहते हैं । हम ऐसे नहीं थे, बिजली वहां नहीं थी, हम इतने समय में वहां पहुंच गये थे, आदि-आदि बातों से ऐसा मालूम होता है कि सब अपनी-अपनी चमड़ी बचाना चाहते हैं । ऐसा नहीं मालूम होता कि इस दुर्घटना से हमारा दिल कहीं ठुकराया गया है जिस से हम को प्रायश्चित हो ।

मान्यवर, मैं मंत्री महोदय से यह जानना चाहता हूं कि शुक्रवार को वहां अधिक दर्शक जाते हैं । क्या उस दिन मीनार पर दर्शकों की रक्षा करने का कोई विशेष प्रबंध किया जाता है और यदि उस दिन कोई विशेष प्रबंध नहीं किया जाता है तो क्यों नहीं किया जाता है । क्योंकि यह बात सब को मालूम है कि निःशुल्क प्रवेश का जो भी दिन होता है उस दिन दर्शक ज्यादा जाते हैं और चूंकि दर्शक ज्यादा जाते हैं इस लिए उन की रक्षा की जिम्मेदारी भी अधिक हो जाती है । तो पहले मैं जानना चाहता हूं कि क्या प्रबंध किया जाता है और यदि नहीं किया जाता है तो क्यों नहीं किया जाता है । दूसरे

शुक्रवार की बिना टिकट की प्रथा क्यों? और यह टिकट की प्रथा कब चालू की गयी? हम ऐसी ऐतिहासिक जगहों की बात तो समझ सकते हैं कि जो प्रार्थना की जगहें हीं खास कर शुक्रवार को जहां प्रार्थना की जाती हो, जैसे मस्जिदें हैं। वहां जाने के लिए फ्री पास की बात तो समझ में आ सकती है लेकिन मीनार में तो कोई मस्जिद नहीं है। तो वहां के लिए शुक्रवार को निःशुल्क प्रवश का प्रथा क्यों चालू की गयी और क्या यह चालू रहेगी?

तीसरी बात जो मैं जानना चाहता हूं वह यह है कि सांस्कृतिक और ऐतिहासिक महत्व के स्थानों और भवनों के रख-रखाव और वहां पर जाने वाले दर्शकों की रक्षा का क्या कोई विशेष प्रबंध अब से किया जायगा? और आखिरी बात, अखबारों से मालूम होता है कि जो स्टपोड हुआ उस में लोग मरे और क्या-क्या चीजे हुई उन का पता तो, जब कमीशन की रिपोर्ट आयेगी तब चलेगा, तब सारी बातें मालूम होंगी लेकिन एक बात मालूम होती है। कि बहुत से लोगों की चीजें और उन का बहुत सा सामान लोगों ने फेंक दिया या फेंका गया। तो उन के बारे में मंत्री महोदय कुछ बतला सकते हैं कि कितना सामान वहां बरामद हुआ और किस तरह का सामान बरामद हुआ है? और आखिरी बात क्या सरकार वहां पर सीढ़ियों की मरम्मत करेगी और वहां रेलिंग लगायेगी और गुंडों से हिफाजत वहां पर लोगों की करेगी? इस के बारे में सरकार क्या सोचती है?

श्रीमती शीला कौल : मान्यवर हमारे माननीय सदस्य ने अभी पूछा है कि यह टिकट कब से लगे और क्यों लगे और फ्राइडे के दिन क्यों नहीं लगते हैं। तो इस के बारे में बताना चाहती हूं कि यह जो टिकट हैं यह शुरू में 1959 में लगे और तब उन का दाम 20 पैसा था। फिर दस साल के बाद उन की कीमत 50 पैसे हो गयी दिसम्बर से। यह उन्हीं लोगों के लिए लगता है जो 15 साल से ऊपर की उम्र के होते हैं। यह हर म्यूजियम में किया जाता है। मैं तो इस चीज में बहुत लगी रही हूं। हमारे यहां यह होता है कि म्यूजियम में एक दिन फ्री रहता है। ऐसे वर्ग के लोग जो टिकट खरीद नहीं सकते, जिनके लिए 8 आने भी बड़े माने रखते हैं, उन लोगों के लिए फ्री इसलिए रखा है कि वह बगैर पैसे दिए वहां जा सकें और देख सकें।

सामान का आपने जिक्र किया है। मैंने देखा इतना सारा सामान था जो कि बाहर पड़ा हुआ था। उसमें चप्पलें थी, कुछ कपड़े थे, कुछ किताबे थी। हमने खोल-खोलकर तो नहीं देखा लेकिन जैसा मैंने देखा यह आपको बता रही हूं कि उनमें कुछ किताबें, कुछ कपड़े फटे हुए और चप्पलें थीं।

श्री योगेन्द्र शर्मा : मान्यवर, जिस दिन निःशुल्क प्रवेश होता है क्या उस दिन विशेष प्रबंध रहता है दर्शकों की हिफ़ाजत के लिए, दर्शनीय स्थानों की हिफ़ाजत के लिए, यह मैंने पूछा था।

श्रीमती शीला कौल : इसके बारे में मैं पूछकर बता सकती हूं कि कितना स्टाफ वहां रहता है।

श्री सैयद रहमत अली (आंध्र प्रदेश) : जनाब डिप्टी चेयरमैन साहब, कुतुब के बदबख्ताना हादसे के बारे में

[श्री सैयद रहमत अली]

आज इस हाउस में जो मुख्तलिफ़ मुअज्जिज अरकान के ख्यालात को सुनने का मौका मिला तो मैं उनके ख्यालात के बारे में सिर्फ यह बात कह सकता हूं कि हम कुछ ठोस किस्म की जानकारी हासिल करके इस हाउस में बात करते तो ज्यादा मुनासिब था। बात यहां यह कही गई कि बदअखलाकी का मुजाहिरा गुण्डागर्दी का मुजाहिरा, बैरूने मुल्कों से आई हुई लेडीज के साथ हिन्दुस्तान के बच्चों ने किया, इससे हमारा सिर शर्म से झुक जाता है। इसके बारे में मैं यह बात अर्ज करना चाहता हूं कि इस रोज जो बदबख्ताना हादसा हुआ, उस हादसे में मेरा लड़का अजमत सलीम और मेरा भानजा अमीन शहजाद दोनों भी गये हुए थे। अमीन शहजाद कुतुब की सीढ़ियों पर ऊपर जब चढ़ने लगा तो मेरे बच्चे ने यह बात कही कि ऊपर जाना मुनासब नहीं है। मेरा बच्चा नीचे ही रुक गया लेकिन मेरा भानजा ऊपर चढ़ा हुआ था। मैं बताऊं कि जो भगदड़ मची, उस भगदड़ में—मेरे बच्चे का कद कुछ ज्यादा लम्बा है, एक लड़की का हाथ उसके गले पर आ गया। तो क्या यह बात कही जा सकती है कि मेरे भानजे को किसी लड़की ने छेड़ा? अगर भगदड़ में किसी लड़की का हाथ किसी के गले में लग जाए और उछल-कूद में किसी के कपड़े निकल जायें तो उसका हिन्दुस्तान को बदअखलाकी का मुजाहिरा करार देने वाले बुजुर्ग से मैं दरख्वास्त करना चाहता हूं कि खुदारा हिन्दुस्तान को बदनाम करने से बचाइये। एक मैम्बर ने यह बात भी कही कि हिन्दुस्तान की तहजीब की किस्मरदगी कुतुब पर की गई। 'कुछ न समझे खुदा करे कोई', अगर हमारा यह अन्दाजे फिक्र है तो बहुत गलत है। मैं पूरी जिम्मेदारी के साथ इस हाउस के रुक्न की हैसियत से यह बात कहना चाहता हूं कि मेरा बच्चा पहला बच्चा है अजमत जिसने पुलिस और फायर सर्विसिज को फोन किया वहां के गैस्ट हाउस से। फोन के 15-18 मिनट के बाद पुलिस वहां पर आई? यह बात सही है कि वहां एक चौकीदार नीचे मौजूद था। जो मेरा बच्चा दबाव में फंसा हुआ था उसका कहना यह था कि लोग सफोकेशन की वजह से गिरकर जो उसके कदमों की तरफ आ रहे थे तो उसके पांव झुक गये थे, लेकिन अपनी ऊंचाई की वजह से वह सांस ले सका। लाइट पहले ही से कुतुब मीनार में मौजूद नहीं थी। किसी तरह की गुण्डागर्दी का मुजाहिरा हिन्दुस्तान की इस कुतुब मीनार के इस बदबख्ताना हादसे में नहीं हुआ। इसकी जानकारी पूरी तरह से की जा सकती है। लोगों की चप्पलें छूटीं। मैं खुद यह बात कहूं तो बेजा न समझी जाए कि मेरे भानजे का पेंट नीचे उतर गया। क्या आप कहेंगे कि उसकी पेंट किसी ने खींची? अगर किसी खातून, किसी लड़की की साड़ी या कपड़े उतरे हैं तो उस भगदड़ में उतरे हैं। जहां पर हिन्दुस्तान के नौजवानों को या उस दिन जो लोग कुतुब पर मौजूद थे उन पर इल्जाम लगाना गलत है। 15 वर्ष के, 16 वर्ष के, 18 वर्ष के और कुछ बुजुर्ग भी वहां थे लेकिन हर बात को सरकार का निकम्मापन करार देना

मैं इस जहन के दिवालियेपन पर कुछ नहीं कह सकता हूं ।

†[شری سید رحمت علی (آندھرا پردیش): جناب ڈپٹی چیرمین صاحب قطب کے بارے میں آج اس ہاؤس میں مختلف معزز ممبران کے خیالات کو سننے کا موقع ملا تو میں ان کے خیالات کے بارے میں صرف یہ بات کہہ سکتا ہوں کہ ہم کچھ ٹھوس قسم کی جانکاری حاصل کرکے اس ہاؤس میں بات کرتے تو زیادہ مناسب تھا ۔ بات یہاں یہ کہی گئی کہ بد اخلاقی کا مظاہرہ - غنڈہ گردی کا مظاہرہ - بیرون ملک سے آئی ہوئی تہذیب کے ساتھ ہندوستان کے بچوں نے کیا - اس سے ہمارا سر شرم سے جھک جاتا ہے - اس کے بارے میں یہ بات عرض کرنا چاہتا ہوں کہ اس روز جو بد بختانہ حادثہ ہوا اس حادثہ میں میرا لڑکا عظمت سلیم اور میرا بھانجا امین شہزاد دونوں بچ گئے ہوئے تھے - امین شہزاد قطب کی سیڑھیوں پر اوپر چڑھنے لگا تو میرے بچے نے یہ بات کہی کہ اوپر جانا مناسب نہیں ہے - میرا بچہ نیچے ہی رک گیا لیکن میرا بھانجا اوپر چڑھا ہوا تھا -

میں بتاؤں کہ جو بھگدڑ مچی اس بھگدڑ میں میرے بچے کا قد کچھ زیادہ لمبا ہے - ایک لڑکی کا ہاتھ اس کے گلے پر آ گیا تو کیا یہ بات کہی جا سکتی ہے کہ میرے بھانجے کو کسی لڑکی نے چھوڑا - اگر بھگدڑ میں کسی لڑکی کا ہاتھ کسی کے گلے میں لگ جائے - اور اچھل کود میں کسی کے کپڑے نکل جائیں تو اس کو ہندوستان کی بد اخلاقی کا مظاہرہ قرار دینے والے بزرگوں سے میں درخواست کرنا چاہتا ہوں کہ خدارا ہندوستان کو بدنام کرنے سے بچائیے - ایک ممبر نے یہ بات بھی کہی کہ ہندوستان کی تہذیب کی عصمت دری قطب مینار پر کی گئی — کچھ نہ سمجھے خدا کرے کوئی — اگر ہمارا یہ انداز فکر ہے تو بہت غلط ہے - میں پوری ذمہ داری کے ساتھ اس ہاؤس کے رکن کی حیثیت سے یہ بات کہنا چاہتا ہوں کہ میرا بچہ پہلا بچہ ہے عظمت جس نے پولیس اور فائر سروس کو فون کیا وہاں کے گیسٹ ہاؤس سے - فون کے 15—18 منٹ کے بعد پولیس وہاں پر آئی - یہ بات صحیح ہے کہ وہاں ایک چوکیدار موجود تھا - جو میرا بچہ دباؤ

*[ ] Transliteration in Arabic Script.

[شری سید رحمت علی]

میں پھنسا ہوا تھا اس کا کہنا یہ تھا کہ لوگ سفیکیشن کی وجہ سے گر کر جب اس نے قدموں کی طرف آ رہے تھے تو اس کے پاؤں جھک گئے تھے - لیکن اپنی اونچائی کی وجہ سے وہ سانس لے سکا - لائٹ پہلے ہی سے قطب مینار میں موجود نہیں تھی - کسی طرح کی غنڈہ گردی کا مظاہرہ ہندوستان کی اس قطب مینار کے اس بد بختانہ حادثہ میں نہیں ہوا - اس کی جانکاری پوری طرح سے کی جا سکتی ہے - لوگوں کی چپلیں چھوٹیں - میں خود یہ بات کہوں تو بے جا نہ سمجھی جائے کہ میرے بھانجے کا پیلٹ نیچے اتر گیا - کیا آپ کہیں گے کہ اس کی پینٹ کسی نے کھینچی - اگر کسی خاتون کسی لڑکی کی ساڑی یا کپڑے اترے ہیں تو اس بھگدڑ میں اترے ہیں - یہاں پر ہندوستان کے نوجوانوں کو یا اس دن جو لوگ قطب پر موجود تھے ان پر الزام لگانا غلط ہے - پندرہ ورش کے - سولہ ورش کے - اٹھارہ ورش کے اور کچھ بزرگ بھی وہاں تھے لیکن ہر بات کو سرکار کا نکماپن قرار دینا - میں اس ذہن کے دیوالیہ پن پر کچھ نہیں کہہ سکتا ہوں -]

श्री उपसभापति . अब इस पर बहस की जरूरत नहीं। स्पेशल मेंशन, श्री कलराज मिश्र।

REFERENCE TO THE REPORTED DEVASTATING FIRE DUE TO AN ELECTRIC SHORT CIRCUIT IN AHMEDABAD, RESULTING IN THE DEATH OF 49 PERSONS—contd.

श्री कलराज मिश्र (उत्तर प्रदेश) : अभी कुतुब की दुखद दुर्घटना के बारे में चर्चा हो रही थी। मैं अपनी तरफ से संवेदना प्रकट करना चाहता हूं। अहमदाबाद में आग लग जाने के कारण, जो हिमालय का एक प्रारूप बनाया गया था उसमें दर्शन करने वाले दर्शनार्थियों की मृत्यु हो गई। इस अखबार में तो लिखा हुआ है कि 49 लोग मरे हैं लेकिन 50 से भी अधिक मरे होंगे सैकड़ों की भी संख्या हो सकती है? दुर्घटनाओं का ऐसा तांता लगा हुआ है जिससे लगता है कि इसके पीछे कोई रहस्य है हिमालय के दर्शन के लिये जो लोग गये हुए थे वह हिमालय के प्रारूप को देखने के लिये गये हुए थे और वह हिमालय का प्रारूप लकड़ी और कागज का था। बीस मीटर ऊंचा था।

SHRI YOGENDRA MAKWANA: The Chairman has directed me to make a statement on this tomorrow. Why is he raising it now?

श्री कलराज मिश्र : क्योंकि स्पेशल मेंशन स्वीकार किया गया है इसलिये मैं अपनी बात कह रहा हूं।

MR. DEPUTY CHAIRMAN: He has been allowed a Special Mention before that.

न

श्री कलराज मिश्र : मैं इसलिये निवेद करना चाहता हूं कि समाचार पत्रों के

The terms of reference are:

(1) to inquire into the circumstances leading to the tragedy resulting in the death of and injuries to a large number of persons on 4th December, 1981 at Qutab Minar, New Delhi;

(2) the extent of the tragedy;

(3) to fix responsibility for the mishap; and

(4) to suggest remedial measures for prevention of such incidents in future.

Now these are the terms of reference for the Judge who has to investigate into it and during the course of the investigation everything will come out, as to whether the Police reached there in time or not, as to when the police was informed and when they reached. Now, Sir, according to the record of the police, which is very clear, and which will be there before the Inquiry Commission also, the police had reached within ten minutes.

AN HON. MEMBER: At what time?

श्री उपसभापति जो टाइम पढ़ा, वहीं टाइम है।

SHRI DINESH GOSWAMI (Assam): Mr. Deputy Chairman, Sir, there is one thing I suggest. For the hon. Minister it is all right to come and make a statement. If he refers to the time in the House, in this House, in that case, supposing some of us feel that the time is not correct and we shall have to counter that. Then there will be a dispute about it. The question whether the police had reached in or not at the prescribed point of time, may be avoided, because later on it may be referred in the Inquiry Commission. . .

SHRI YOGENDRA MAKWANA: That is exactly what I am doing. I have not given the time. This is the shortest time which they took to reach there. I have not given the time, when they were informed and at what time they left. I said they reached within the shortest possible time and immediately after reaching

1 P.M. the spot they enquired. Sir, within 23 minutes, three police parties reached there, and within 35 minutes four police parties reached there. One came from the police station, another from the control room, and over and above there is the district officer who keeps on moving in the district, who also reached there. When the wireless message was received by the central control room, they immediately flashed another message all along the district, so that whichever vehicle receives the message can go with the officers for rescue operation. So, when they reached the spot, immediately they started the rescue operation with the help of the drivers of the tourist bus and the people there because when the first information was given, some two officers went there and then at different points of time more officers reached the place and started the rescue operation. It is not true that it was not the police who removed the bodies. Sir, they removed the bodies, and they removed them with the help of the people also because they had to take the help of the people as they were less in number at the initial stage.

Sir, the second point is also a matter of enquiry as to whether there was light or not. That is a point to be investigated by the enquiry commission. Even the Delhi Administration also has formed a committee of officers, the Chief Engineer and other officers, to investigate whether was a failure of light or not and to suggest measures also. They have already done that, and they have to submit a report within two days. So, that report will be before the enquiry commission.

Then, regarding the 15th of August incident, on which he gave more emphasis and spoke with a louder voice that on the 15th of August such an incident had occurred, Sir, on the police record there is no such complaint. The police authorities have not received any such complaint on the

[Shri Yogendra Makwana]

15th of August nor afterwards. I do not know whether the Archaeological Department has got some complaint or not, but if they had got one, they would have definitely passed it on to the police because ultimately it is the work of the police to maintain law and order, and if there is any complaint of this nature, it is the police who could investigate it. So, it appears that they also have not received such a complaint on the 15th of August nor have the police authorities received such a complaint. If there was any complaint that they are stating in this House now, why have they not informed the police on the 15th of August? If Mr. Mathur was having it, he should have informed the police instead of stating it here in louder voice. Giving information to the House and not giving it to the police does not make any sense.

श्री जगदीश प्रसाद माथुर : आपने पुलिस का रिकार्ड देखा है कि वैसे ही कह रहे है ?

SHRI YOGENDRA MAKWANA: I have said that before I came to the House I went through all the papers. I have got the inquest form also because I wanted to know the columns. I am not coming blank to the House. I have checked all the record of the police, and nowhere has the complaint been lodged on the 15th of August. It is baseless to say that there was a complaint lodged with the police on the 15th of August. He has alleged that the complaint was made to the police.

श्री जगदीश प्रसाद माथुर : रिपोर्ट की है ।

SHRI JAGANNATHRAO JOSHI (Delhi): If the goondas were doing it under protection of the police, they would not have registered the complaint. *(Interruptions)*

SHRI YOGENDRA MAKWANA: If they were knowing the incident, they should have informed the police. They should have complained to the police. If the police had failed to take notice of it, they should have informed us and we would have taken action against the officials. **(*Interruptions*)** This is far from the fact and the allegations made against the police are baseless.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: This discussion will continue after lunch. I have to announce that the Minister of State for Railways, who was to make a statement, I think, just after **the Calling Attention, has been held** up at Madras, and so he would make that statement at 5-00 P.M. today.

SHRI JAGDISH PRASAD MATHUR: What about the statement by the Housing Minister?

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Let us proceed with the Calling Attention after lunch.

सदन की कार्यवाही दो बजे तक के लिए स्थगित की जाती है ।

The House then adjourned for lunch at five minutes past one of the clock.

The House reassembled after lunch at three minutes past two of the clock, **Mr. Deputy Chairman** in the Chair.

MR DEPUTY CHAIRMAN: Shri Dinesh Goswami.

SHRI DINESH GOSWAMI: Mr. Deputy Chairman, Sir, it seems that we are living at the present moment under the shadow of death. Every day when we open the newspaper, reports of a large number of deaths because of accidents, train accidents, bus accidents or other accidents, come to us. And even the tragic event at Qutab Minar has been followed by another tragic happening

at Ahmedabad where more than 60 people have died. What has happened at Qutab Minar—I will not call it an accident—is undoubtedly shocking beyond words. It is shocking because probably with slight careful planning and forethought this could have been avoided. It is shocking because a majority of the victims were school-going children who came from the rural areas expecting that it would be a day of pleasure and fun for them; but they met with doom and death. Undoubtedly for what has happened in Qutab Minar the Government and the authorities shall have to share some blame. Equally I think the society has also to take serious note of certain things because unless there is a concerted effort on the part of the administration and also the society at large, these things cannot be totally prevented.

On that day as the newspaper reports say and as the statement also points out, about 300 people went in. I do not want to enquire about the number because that will come out in the judicial inquiry. But everyone knows that the Qutab staircase is a very narrow staircase. The balcony is narrow. I would like to know, therefore, whether there was any statutory regulation on the number of people who can enter into Qutab Minar at a time. And if a statutory regulation was there, what is the number given in that statutory regulation?

Sir, the hon Minister in her statement has said that there was power failure in Qutab Minar and the Home Minister in his earlier statement in the House also spoke about power failure there. But I read in the newspapers the next day that the Corporation had denied that there was any power failure in the area. This raises two questions Was there a general power failure in the area or was it that there was a sudden power failure in Qutab Minar only? And if it was a power failure in Qutab Minar itself, obviously some suspicion does arise that probably power was put out deliberately and in that case, it was undoubtedly a sinister thing which could not have been done without the collusion of the persons who were there in charge of Qutab Minar. Then the newspapers and the Statesman photo and the news items show that under cover of darkness, two foreign women—there were a large number of women—were molested. I do not want to enter into the subject matter of this controversy because that concerns the enquiry. But it pains me to see that on that very evening Mr. Balwant Singh, Deputy Commissioner of Police (South)—on that day itself denied the allegation of molestation of foreign women. This is something which we cannot approve of. After all, he ought to have remained silent on the matter; whether there was molestation or not would have been the subject-matter of an independent inquiry, judicial or otherwise. Before making such a statement he ought to have undoubtedly made personal verifications. But to say that there was no molestation, without proper enquiry, gives the impression that the authorities are not prepared to come before the inquiry with an open mind and place all the facts. The Minister of State has said that police records are kept in detail in the police registers. Those who have got something to do with criminal courts know that all records can be manipulated—and are manipulated. Therefore let us not give too much of importance to these records. After all, let us not take it as a personal question; the Government's reputation is at stake. The question is: Had everything been done so that this tragedy could not have occurred? The authorities must also try to find out what are the reasons for which the tragedy occurred.

In fact, the first report which came to the hon. Minister and which has come out in the papers is that the Qutab Minar had burst. I would like to know from the Minister, because it has come out in the papers, and it is a fact that the first report that came to him was that the Qutab Minar had burst. How is it possible that such a report could have come if people in authority had lost no time

[Shri Dinesh Goswami]

and rushed there within a very short time and gave their information?

The other point that I would like to make is regarding the degeneration of social responsibility. If people take to such acts of molesting women—and foreign women—it will have a very serious respurcussion on my hon. friend, Mr. Sharma's Ministry; if news goes out into the world that women in Indian streets are not safe, this affects the image of our country; and apart from that even in mundane, financial matters, the tourist traffic will suffer badly. And India has had a very high reputation of respect to women in the international world. Now, Sir, unfortunately, you yourself or myself or everyone of us must have felt in every walk of life, whether it is while travelling in the train or in the taxi or in a bus that there is total disrespect to authority. And if you warn somebody, "Look here! I am going to report you to the police", he replies to you with a jeer. Nobody cares for authority. This is a situation which is very dangerous to the society at large. I know that it cannot be effectively checked, there cannot be any effective solution only by the authorities; a social awareness today has become necessary and to create that social awareness, I think the entire House shall have to apply its own mind because unless we apply our own minds at this particular juncture to this problem, it cannot be checked. What has happened at Qutab Minar is happening everyday; it is happening in various walks of life. Many facts do not come to light as many do not give publicity to the experience, whether they are foreign or Indian.

Therefore, I would like to know one or two things. I would not like to ask anything which may affect or prejudice the inquiry. Firstly, is there any statutory limit to the number of persons that can enter the Qutab Minar at a time? The Minister has said about power failure. I would like to know whether there was a general power failure or there was a power failure only in Qutab Minar. I do not speak about that particular day but in Qutab on a free day the problem of law and order and the problem of safety of women appear to be there. Therefore, I would like to know how many police men were posted there?

Lastly, there has been newspaper report that when the Judge, Mr. Jagdish Chandra, went to the spot yesterday, there was none from the Archaeological Department present. This gives us the impression as if the authorities are almost on a war path with the Commission of Inquiry which is not a desirable thing. Therefore, I would like to know if anybody was present at that particular point of time and, if not, why not.

SHRIMATI SHELLA KAUL: I shall start from the last question. I was asked whether the staff was present there yesterday. Since the Calling Attention has been admitted, I wanted all the information. We wanted to get all the facts because all kinds of questions are being asked. And I was not present there when it took place. But I have to reply to all the Questions. So, I wanted to know the real facts. So, the staff were with me throughout the day.

As I said in my statement, there is regulated entry into the monument. It has been there for many, many years. Even on the day of the tragedy entry was being regulated. so, many could go to begin with. When that number comes down other could go in the same number. This is just for the safety of the whole place.

About the general power failure, I do not know. A Committee has now been formed and, therefore, I do not want to go into details. Day before yesterday it was said that power failure was there and today it has been said that it is not the right thing. I am nobody to say what happened in the Power House. The Committee is there and the facts will come out.

SHRI YOGENDRA MAKWANA: I agree with the hon. Member that

there could be manipulations. But so far as this incident is concerned, the message was given to three different places. One is the Central Control Room. There is some record. The second is the Fire Brigade. There also the record is there. The third is the concerned Police Station, Mehrauli. In all the three places it is difficult to manipulate records. However, we have already taken over the record and there cannot be any change in the record now.

Before I come to the House I also read newspapers. I asked the concerned DCP whether he has made any such statement and he has flatly denied it. He said that he has not told any pressmen about the ladies. He said he has no said it and I have no reason to disbelieve the officer.

The third thing was about the first information that Qutab was burst. The first information was like this:

"कुतुब मीनार, महरौली से स्कूल के बच्चों को किसी ने धक्का दे दिया है।"

Under this information was received by the Police Station there is some procedure. The procedure is that it has to be reduced to writing and first copies given to the officers. Without taking that copy the Sub Inspector rushed on the scooter to the place. When he came he transmitted another message. Now, from the Central Control Room one also came. It is because there was also a message.

SHRI NARASINGHA PRASAD NANDA (Orissa): Who lodged the FIR?

SHRI YOGENDRA MAKWANA: That is not an FIR. This was a telephone message.

SHRI NARASINGHA PRASAD NANDA: It is not treated as an FIR?

SHRI YOGENDRA MAKWANA: It is not an FIR as such. It is only the first information. But that was a telephone message. They do not konw who gave it. They say that probably one man who has a hotel there—his name is Srivastava or something like that—has given that information. He did not enter. He was outside the compound and the compound is very big and the Qutab is 200 metres away from the main gate. The hotel is outside the gate and he probably telephoned the police and the police came. When the van came from the Central Control Room, they went inside. But the driver was in the van itself which was having a wireless set also. So, somebody told him that the Qutab had burst and many people died. So, Sir, he also sent a message immediately without getting it confirmed. He was outside the compound, that is, outside the gate. So, from there he transmitted the message. Later on, when the officers came back, they also gave the message and that was the correct message which was that such a tragedy had taken place. So, Sir, like that there was confusion there and in that confusion only this has happened. So, Sir, there is no contradiction in this except this that, you see, this all happened due to confusion only.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Yes, Mr. Shiva Chandra Jha.

SHRI YOGENDRA MAKWANA: One minute, Sir, One point I have not clarified and that is regarding the two foreigners, the two ladies, one of whom has made a statement that they were molested. Immediately, the police tried to locate them. But it was not possible. So, they contacted the New Zealand High Commissioner and the Foreigners' Regional Registration Office. From them also they did not get the information. So, they tried to check up with the guest houses where generally such foreigners are put up and in one of such guest houses, they found, these ladies were staying, but they were not contacted. Now, they have received information that the officers went there and are recording the statements of those ladies. But the first information is that the lady refus-

[Shri Yogendra Makwana]

ed to give any statement initially and they are, you see, trying to convince her so that she can give the statement.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Yes, Mr. Shiva Chandra Jha.

श्री शिव चन्द्र झा (बिहार) : उपसभापति महोदय, यह दुर्घटना जो कुतुब मीनार की हुई है इससे हम लोग चिन्तित हैं, यह बात सर्वविदित है । लेकिन मंत्री महोदया ने जो स्टेटमेंट दिया है उसमें जो आखिरी सैन्टेन्स है, उससे अधिक दुख बढ़ जाता है । वह कहती हैं--

"In view of this recent tragedy, I have suspended the entry of the public into the Minar."

यदि टैम्पोरेरी बात हो तब तो हम समझ सकते हैं, कि इतने दिन तक रोकेंगे । लेकिन परमानेन्टली हमेशा कुतुब मीनार में जाना बन्द कर दिया जाएगा, यदि ऐसा सरकार फसला करती है तो मैं साफ शब्दों में कहना चाहता हूं कि सरकार का दिवालियापन है, यह सरकार बैंक्रप्ट हो गई है और दोनों मंत्रियों को मैं कहना चाहता हूं कि जाकर प्रधान मंत्री इंदिरा गांधी से कह दें कि शिव चन्द्र झा कह रहा था कि यदि यह फैसला हुआ कि कुतुब मीनार मे इंट्री बन्द कर दी जाएगी हमेशा के लिए तो यह पंडित जवाहरलाल के दर्शन के खिलाफ है।

उपसभापति महोदय, यह जो दुर्घटना हुई इसमें बिजली फैल्यौर ही नहीं है। इसमे 5 फल्योर्स हैं । मैं आपको बताना चाहता हूं । पहला है आर्कियालाजिकल डिपार्टमट का जिसके मातहत मौन्यूमैंट्स आती है । दूसरा है इलक्ट्रीसिटी डिपार्टमैंट का । तीसरा है स्टाफ का मैनेजमेंट/तीन ही स्टाफ वहा पर हैं यह मैं बाद में बताऊंगा । चौथा है आजकल जो रौक एण्ड रोल का सिनेमा संसार है जिसमें स्वछंदता दिखाई जाती है, आपको शायद इसका तजुर्बा नहीं है. . .

श्री उपसभापति : उन्होंने अमरीका में पढ़ा नहीं, आप तो वहां पढ़े है । . . .

श्री शिव चन्द्र झा : इसमें सिनेरामा भी है, डिस्को भी है । पांचवी और आखिरी सबों की जड़ में यह है कि सरकार का निकम्मापन । अब मैं आर्कियोलोजिकल डिपार्टमेंट के बारे में आपको बताता हूं ।

श्री उपसभापति : विस्तार में मत जाइये ।

श्री शिव चन्द्र झा : संक्षेप में ही बता रहा हूं । अहमदाबाद में शेकिंग टावर है। उस पर किसी का ध्यान नहीं जा रहा है। आप उस पर अगर नहीं चढ़े हैं तो चढ़ कर देख लें । जरूर आप गिरेंगे ।

श्री उपसभापति . मैंने क्या गुनाह किया है ।

श्री शिव चन्द्र झा : मैं चढ़ा था । मैं आपको बताता हूं कि हम बिहार और यू० पी० वाले तो आम और पीपल पर चढ़ने के अभ्यस्थ हैं । मैं जब चढ़ा था तो डर रहा था कि अब गिरा-अब गिरा । वहां पर कोई रेलिंग नहीं हैं । मैं मन में यही सोच रहा था कि कम खत्म हो, कब खत्म हो और नीचे उतरुं ।

श्री उपसभापति : ईश्वर का धन्यवाद कि आप लौट आए ।

श्री शिव चन्द्र झा : इस पर आर्कियोलोजिकल डिपार्टमेंट ने अभी तक कोई ध्यान नहीं दिया । इसी तरह

से पटना में गोलगरी मानुमेंट हैं । इन सीढ़ियों पर भी दुर्घटना हो सकती है। ये जितनी बातें हैं इन सब बातों को मद्दे नजर रख कर आर्कियोलोजिकल डिपार्टमेंट के पास इनकी रक्षा के लिए कोई स्कीम नहीं है। मैं मंत्री महोदय से जानना चाहता हूं कि अर्किलोजिकल डिपार्टमेंट के इन सब खामियों पर स्टीमलाइन करेंगी या नहीं ? दूसरी बात आती है पावर फेल्योर की । अखबारों में बात आ रही है। एक डिपार्टमेंट दूसरे पर फेंक रहा है, और दूसरा डिपार्टमेंट तीसरे पर फेंक रहा है और वे मंत्री महोदय पर फेंक रहे हैं। इधर मंत्री महोदय मदन पर फेंक रही हैं।

श्री उपसभापति : इंक्वायरी हो रही है।

श्री शिव चन्द्र झा : इलेक्ट्रिसिटी, की यदि बात हैं तो किसने गुल की है अगर अपने आप फ्यूज हो गई है तो क्या वहां सेल्फ जनरेटिंग इलेक्ट्रिसिटी की व्यवस्था नहीं हो सकती ? अस्पताल में ऐसी व्यवस्था है । आप कहेंगे कि अस्पताल की दूसरी बात है। मैं एक बात बताना चाहता हूं कि राजगीर में जापानियों का मठ है, Thanks to the Japanese brain, 1964-65 में इसका उद्घाटन हुआ था । उस मठ को जोड़ने के लिए उन्होंने देखा कि नीचे बहुत मेहनत करनी पड़गी । इसलिए उन्होंने इलेक्ट्रिक वायर के ऊपर 30 कुर्सियां जोड़ दी । उस कुर्सी पर बैठ कर लोग आते जाते हैं। मैंने घड़ी से देखा कि 7 या 8 मिनट में वे आ जाते हैं। मैंने उनसे पूछा कि अगर पावर फेल हो गई तो क्या होगा, नीचे तो बड़ा भयानक है तो उन्होंने कहा कि यहां पर सेल्फ जेनरेटिंग का है इंतजाम 5-7 मिनट तक हम देखते हैं अगर लाइट नहीं आती है तो हम सेल्फ जेनरेटिंग का प्रयाग करते हैं । मैं यह कहना चाहता हूं कि क्या ऐसी व्यवस्था यहा नहीं हो सकती ?

तीसरा सवाल स्टाफ के बारे में है । क्या वहां तीन अटेंडेंट काफी हैं? एतिहासिक मानुमेंट है । दो हजार लोग प्रतिदिन वहां आते हैं। फ्राइडे, जुम्मे के दिन यह फ्री भी रहता है तो और भी ज्यादा लोग आते हैं इसलिए मैं पूछना चाहता हूं कि क्या तीन अटेंडेंट से यह मैनेज हो सकता है? बाहर से भी लोग आते हैं । मालस्टेशन वगैरह भी होता है तो पुलिस का दफ्तर चाहे एक-आधा घंटे के लिए हो, 40, मिनट के लिए हो, वहां होना चाहिए। मैं यह पूछना चाहता हूं क्या वहां पर नीयर में पुलिस का दस्ता नहीं हो सकता ?

चौथी बात यह कहना चाहता हूं, हमारे साठ साहब नहीं बैठे हैं। वह बड़ा गर्व अनुभव कर रहे में कि 'इंसाफ का तराजू' पिक्चर अच्छी है । जब यह आई तो मैं देखने गया । लेकिन थोड़ी ही देर में वहां से भाग आया । मैं पूछता हूं कि क्या यह पिक्चर देखने लायक है। इस उच्छृंखलता के ऊपर रोक लगे इस पर सरकार को सोचना चाहिए ।

पांचवी बात यह है कि यह सब सरकार के निकम्मपन की वजह से है । मीनार में दुर्घटना हुई इसलिए, मीनार में जाने के लिए सरकार ने

[श्री शिव चन्द्र झा]

रोक लगा दी । रेलों में दुर्घटनायें होती हैं तो रेल गाड़ी बंद कर दी गई । हवाई जहाज की हाई जैकिंग होती है तो प्लेन की उड़ान बंद कर देते हैं । सदन में हल्ला होता है इसलिये सदन को बंद कर दो सारा झंझट ही मिट जाएगा यह सरकार के बुनियादी निकम्मेपन की वजह से हो सकता है । सरकार इसको वैल थोट करे । अगर सरकार इसको हमेशा के लिये बंद कर रही है तो यह आपका दिवालियापन ही कहा जायेगा । मैं माननीय मंत्री महोदया को कोई दोष नहीं देता हूं । वे तो बिलकुल नई हैं और उनको तो बेमतलब का फांसी पर चढ़ाया जा रहा है। उन बेचारी को तो यह भी पता नहीं है कि दुनिया में श्रीमती इन्दिरा गांधी के अलावा कोई दूसरा भी पहले महिला प्रधान मंत्री हुआ है । इसमें उनका दोष नहीं है। मैं छोटे गृह मंत्री जी से पूछना चाहता हूं कि वे भाटगिरी न करके साफ साफ बतायें कि वे इस बार में क्या करने जा रहे हैं ?

श्रीमती शीला कौल : मान्यवर, हमारे झा साहब ने अभी इस बात का जिक्र किया है कि हम कुतुब मीनार को परमानेन्टली बन्द कर रहे है। मैंने तो परमानेन्ट लफ्ज का इस्तेमाल नहीं किया है। मैंने तो यह कहा है कि हम इसको ससपेन्ड कर रहे हैं । इसके पीछे भावना यह है कि इस बारे में एक इन्क्वायरी बैठाई गई है, उसके मेम्बर्स या इन्क्वायरी करने वाले लोग कुतुब मीनार के अन्दर जाना चाहेंगे और देखना चाहेंगे कि यह क्या हुआ और कैसे हुआ, इसलिये उसको ससपेन्ड किया गया है ।

श्री शिव चन्द्र झा : अगर ऐसा है तो आप के स्टेटमेंट में टैम्परेरी शब्द होना चाहिये था ।

श्रीमती शीला कौल : जब परमानेन्ट लफ्ज नहीं लिखा गया है तो इसका यही मतलब है कि थोड़ी देर के लिये ससपेन्ड किया गया है । अगर परमानेन्टली बन्द करते तो परमानेन्टली लफ्ज लिख देते ।

श्री उपसभापति : ठीक है; आपने यह बात स्पष्ट कर दी है।

श्रीमती शीला कौल : मान्यवर, ऐसा लगता है कि जब मैंने स्टेटमेंट इस बारे में किया था तो शायद माननीय सदस्य यहां पर नहीं थे। मैंने अपने स्टेटमेंट में यह कहा था कि यहां पर रेगुलेटड एन्ट्री है । पहले लोग अन्दर चले जाते हैं और जब 50 लोग बाहर आ जाते हैं तो 50 आदमियों को अन्दर भेज दिया जाता है। ज्यादा लोगों को अन्दर नहीं भेजते हैं । इस तरह से वहां पर रेगुलेटड एन्ट्री है। पिछले 750 सालों से लोग ऊपर जाते रहे हैं और नीचे आते रहे हैं। इस तरह का कोई एक्सीडेंट वहां पर नहीं हुआ है । यह पहला इत्तफाक है जब इस तरह की दुर्घटना हुई है । इसका हमें बहुत शोक है और इस बारे में हमारे दिल में बहुत तकलीफ है । हम चाहते हैं कि इस तरह की दुर्घटना दुबारा न हो । इसलिये ज्यादा अच्छा तो यह होता कि अगर माननीय सदस्य हमें अपनी राय देते कि इस संबंध में हम क्या कर सकते हैं ? सिर्फ नुक्ताचीनी करने से हमें कोई मदद नहीं मिलती है। अगर आप हमें अपनी राय देते तो वह ज्यादा अच्छा होता ।

श्री शिव चन्द्र झा : सेल्फ जैनरेटिंग यूनिट बनाने के लिए आप क्या कर रहे हैं?

श्रीमती शीला कौल : उसके बारे में मैंने कहा है कि एक कमेटी बैठी हुई है। बिजली वाले और डेसू वाले उसको सोच रहे हैं।

श्री उपसभापति : इन बातों का आपने जवाब दे दिया है। इनको दोहराने की जरूरत नहीं है।

श्री श्रीकान्त वर्मा (मध्य प्रदेश) : उपसभापति महोदय, शुक्रवार को कुतुब पर ऐसी दुर्घटना हो गई जिससे सारा राष्ट्र स्तब्ध रह गया लेकिन इस सवाल पर दलगत दृष्टिकोण से विचार करने से किसी नतीजे पर नहीं पहुंचा जा सकता है। छोटे-मोटे राजनीतिक फायदे तो उससे जरूर मिल जाएंगे, लेकिन उससे कोई सच्चा फायदा नहीं होगा। दुर्घटना का समाचार जैसे ही मिला, प्रधान मंत्री घटना स्थल पर गईं, गृह मंत्री वहां गये, शिक्षा मंत्री गईं और दूसरे अधिकारी भी गये। अब इस प्रकार से लाशों का रोजगार करने से कोई फायदा नहीं होगा। बेहतर तो यही होगा कि हम इस बात पर विचार करें कि ऐसी दुर्घटना आयन्दा न हो और अगर आप चाहें तो इस विषय पर, कुतुब की ट्रेजिडी पर नहीं, बल्कि पुरातत्व पर, इन दुर्घटनाओं पर, मंदिरों पर, मूर्तियों पर और स्मारकों पर आगे विस्तृत बहस भी करा सकते हैं। लेकिन इस प्रकार की दुर्घटना से राजनैतिक दृष्टिकोण से विचार करके लाभ उठाना ठीक नहीं होगा। इसलिये मुझे इस बहस से बहुत ज्यादा निराशा हुई है। इस बहस से ज्यादा उपयोगी वह छोटी-सी सभा थी जो शुक्रवार को यहां पर हुई थी। इस बहस से ज्यादा उपयोगी वह श्रद्धांजलि थी जो कि आपके आसन पर बैठे हुए आसनाध्यक्ष जी ने दी थी। इस बहस से ज्यादा उपयोगी वह दिन था जब दोनों सदनों/की कार्यवाही स्थगित कर दी गई थी। मैं समझता हूं कि इतना काफी था। लेकिन फिर भी अगर बहस का उद्देश्य देश में एक ऐसा वातावरण पैदा करना होता जिससे कि यह दुर्घटना दोबारा न हो तो इसकी कोई उपयोगिता होती। लेकिन इसकी कोई उपयोगिता नहीं है। अच्छा तो यह होता कि हम सही तौर पर यह विचार करते कि क्यों दुर्घटना हुई, तकनीकी दृष्टि से नहीं, सिर्फ पावर फेलुअर से नहीं, रोज पावर-फेलुअर होते हैं, रोज बिजली कटती है, रोज बिजली बंद हो जाती है, लेकिन रोज दुर्घटनायें नहीं होतीं। यह क्यों हो रहा है? यह इस लिये क्योंकि इसके पीछे जहां तक मैं सोच सका, मेरे मन में इस बारे में कोई भ्रम नहीं, कि कुछ शरारती तत्व, गुंडे होते हैं जो कि स्त्रियों के साथ दुर्व्यवहार करते हैं। इस कारण यह एक सामाजिक दुर्घटना है, एक मानवीय दुर्घटना है और इसके बारे में समूचे समाज को सोचना पड़ेगा, विचार करना पड़ेगा। अगर इस पर सिर्फ सरकार विचार करेगी तो किसी नतीजे पर नहीं पहुंच सकते हैं। यह सिर्फ ला एंड आर्डर, शांति और व्यवस्था की समस्या नहीं है। बल्कि श्री शिव चन्द्र झा जी ने ज्यादा सही कहा है कि आज नैतिक मूल्यों में गिरावट हुई है और यह उसका नतीजा है। बिजली फेल हुई, जिन भी कारणों से हुई हो, पहले भी होती रही होगी। कुछ शरारती तत्व वहां पर होंगे जिन्होंने अपने उचक्केपन का परिचय दिया होगा, स्त्रियों को उन्होंने वहां बेइज्जत किया होगा और इससे एक हड़बड़ी वहां हुई होगी और नतीजा यह हुआ कि एक रेला आ गया और लोग पिसते हुए, घुटते हुए मौत के हवाले चले गये।

SHRI B. D. KHOBRAGADE (Maharashtra): It has been alleged this morning by some hon. Member that goonda elements there in that locality are being given protection by the police officers and the Congress (I) leaders. What has the hon. Minister to say about it? *(Interruptions)*

SHRI SHRIKANT VERMA: I am talking something different. I am saying that goonda elements were not confined to Qutab Minar only. They may be in your locality also.

SHRI B. D. KHOBRAGADE: They are being given protection by police

[Shri B. D. Khabragade]

officers and the ruling party Members. That was an allegation made this morning. (*Interruptions*).

SHRI SHRIKANT VERMA: If the police were giving protection, the problem would be simpler; just transfer a few police officers. Here the problem is complicated because the society has degenerated. What to talk of goondas, even young boys, teenagers are not ashamed of teasing women and girls in hospitals and schools. This is the real problem and as long as this problem exists, such tragedies will occur.

उपसभापति महोदय, मैं इस ट्रेजडी को, इस दुर्घटना को कम नहीं आंकता। यह एक बहुत बड़ी दुर्घटना हुई है और सरकार की जिस हद तक इसके लिये जिम्मेदारी है वह उस जिम्मेदारी को उठाने के लिये तैयार है, ऐसा शिक्षा मंत्री महोदय और गृह मंत्री महोदय के वक्तव्यों से स्पष्ट है। जिस हद तक यह अधिकारियों की जिम्मेदारी है, उस हद तक उनको दण्ड दिया जाना चाहिए, उनका तबादला किया जाना चाहिए। लेकिन समाज को भी, इस संसद को भी, इस देश को भी अपने हृदय पर हाथ रखकर सोचना पड़ेगा कि वे इस तरह की दुर्घटनाओं के लिये कहां तक जिम्मेदार हैं। जिन स्त्रियों को नंगा किया गया, जिन लोगों ने यह किया, वे अपने दिल पर हाथ रखकर पूछें कि इस दुर्घटना के लिये वे कहां तक जिम्मेदार है। उपसभापति महोदय, मैं तो समझता हूं कि यह दुर्घटना मुख्य रूप से मानवीय कमजोरियों, मानवीय पतन और अधिपतन की वजह से हुई है। लेकिन फिर भी मेरा विचार है कि पुरातत्व विभाग का पुनर्गठन किया जाना चाहिए। जितनी देखभाल इन इमारतों की होनी चाहिए वह नहीं हो रही है। इसीलिये, ऐसी अवस्था में दुर्घटनायें हो सकती है। अगर पिज़ा की मीनार और आइफिल टावर कुछ दो-चार दरवाजों को सौंप दी जायें तो वे कुछ दिनों में गिर जायेंगी। हमने पिछले 30, 35, 50, 70, 100 वर्षो में अपनी इमारतों की ओर कोई ध्यान नहीं दिया है। हम इतिहास के प्रति एक श्रद्धांजलि भले ही अर्पित कर लें, पर इतिहास से हम सरोकार का अनुभव नहीं करते। हम उसे रोंदने, कुचलने और बेचने की वस्तु समझते हैं। मूर्तियां हमारे लिये या तो पूजा की वस्तु हैं या चोरी करने की चीज है, लेकिन मूर्तियां कला की चीज नहीं है। यह हमारे समाज का पतन है। यह हमारे समाज का पतन है कि बच्चे लुड़कते हुए चले आ रहे हैं कुतुब मीनार पर और बाहर से दरवाजा बन्द कर दिया जाता है। अब यह मै नहीं जानता कि आरोप सही है या नहीं है। यह किसका पतन है? कहां तक अधिकारी इसके लिये जिम्मेदार हैं?

उपसभापति महोदय, मेरा निवेदन है कि छोटी छोटी बातों पर हम न जायं। इमरजेन्सी लाइट होगी तो भी रोशनी गुल होगी, चारों तरफ से प्रकाश होगा तो भी अंधेरा होगा। वास्तविकता तो यह है कि सरकार को पुरातत्व विभाग का पुनर्गठन करना चाहिए। अयोग्य लोगों, अनअनुभवी लोगों के हाथों से निकाल कर योग्य लोगों के हाथों में सौंपा जाना चाहिए। दरबान के हवाले कर देने से कुतुब मीनार नहीं बच सकती उसके साथ-साथ पचासों बच्चों का भी सर्वनाश होगा ही। मुझे आशा है कि शिक्षा मंत्रालय मेरे इन सुझावों पर विचार करेगा। धन्यवाद।

श्रीमती शीला कौल: मान्यवर, अभी माननीय सदस्य ने जिक्र किया है कि जो दुर्घटना हुई है उसकी एक वजह नहीं है लेकिन बहुत सारी हैं। मैं यह नहीं कहूंगी कि यह सब वजह है लेकिन एक मेरी बहुत समझ में आई है वह यह है कि समाज को किस तरीके से बनाना है और किस

तरीके से बच्चों को ट्रेनिंग देनी चाहिए। जैसे कि हमारे यहां होता आया है कि दूसरी लड़की जो है जो आप से बड़ी है वह आपकी बहन है आप से और बड़ी है तो वह आपकी माता है और यदि छोटी है तो वह आपकी बिटिया है। अगर यह नजरिया हम रखें जो कि हमेशा हमारे समाज में होता रहा है तो यह बातें जो होती है नहीं होंगी। लेकिन हमारा समाज जो है वह इस चीज से धीरे धीरे दूर हो रहा है। अब हमको यह बैठ कर सोचना चाहिए कि इसकी क्या वजह है। समाज तो सब का होता है, एक आदमी अकेला दुनिया नहीं चला सकता। हम सब को मिल कर काम करना होगा। यहां जो कहा गया कि जो मीनार है इस पर कोई इंतजाम ऐसा नहीं होता कि इसकी रिपेयर हो तो में आपको यह बताना चाहती हूं कि पिछले पांच सालों में क्या हुआ है और मैंने स्टेटमेंट में जिक्र किया था उसका मतलब यह था कि इसकी रिपेयर हो रही है, इसको दोबारा चारों तरफ से किया जा रहा है और इसका जो खर्च हर साल होता है अगर आप चाहें तो मैं कह दूं।

श्री उपसभापति : इसकी आवश्यकता नहीं है।

श्रीमती शीला कौल : मेरे पास पांच साल के आंकड़े हैं कि हम क्या कुछ खर्च कर रहे हैं। यह कहना कि देखभाल नहीं करते मोनुमेंट्स की यह बात सही नहीं है।

श्री लाडली मोहन निगम (मध्य प्रदेश) : उपसभापति महोदय, इस गम्भीर विषय में दो बातें तो निकलती ही हैं कि मामला दो तरफ की फिसलन का है। एक मामला है मनचलों की मानसिक फिसलन का और दूसरा मामला है लोगों की शारीरिक फिसलन का। लेकिन दोनों फिसलन एक ही सिक्के के दो पहलू है। मैं कुछ कहने के पहले दो तीन बातें जरूर अर्ज कर देना चाहता हूं क्या मंत्राणी जी पुरातत्व विभाग ने किस साल में क्या खर्च किया इसके आंकड़े देने को तैयार हैं? मैं आपकी ईमानदारी पर शक नही करता मैं इतना ही चाहता हूं कि वे सदन को बता दें कि पुरातत्व विभाग क्या आपके यहां सर्वांगीण विकास की उस इलाके की कुतुब मीनार के अन्दर क्या क्या तामीरी तबदीलियां हो इसके बारे में कोई योजना दी है? अगर योजना आपको मिली है तो कब मिली है, कितने रुपये की यह योजना है और अब तक क्यों नहीं पूरी हुई। 1000 करोड़ रुपये आप दिल्ली को खूबसूरत बनाने में और गुल्ली डंडे के एशियाई खेलों पर खर्च करने जा रहे हो लेकिन 15 लाख रुपये इस मीनार के अन्दर फिसली हुई, घिसी हुई और गिरी हुई सीढ़ियों को दुरुस्त करने के लिए नहीं खर्च कर सके। मेरा कहना यह है कि जब बिजली नहीं थी तब भी कुतुब मीनार देखने लोग आते थे अब बिजली फेल हुई या नहीं हुई उसकी आंकड़े बाजी आप कर सकते हैं लेकिन मेरी निश्चित राय यह है कि जिन दिनों अमूमन भीड़ होती है खास कर उन दिनों में जिन दिनों आम जनता के लिए खुला रहता है उस दिन ज्यादा सावधानी की जरूरत होती है। क्या आपके पास कोई आंकड़े हैं। और दिनों में आप पचास आदमी ऊपर जाने देते हों और जिस दिन आम जनता के लिए खुला हो उस दिन चाहे जितने चले जाएं लेकिन यह पहला मौका नहीं है लोग आते जाते रहते हैं, भीड़ होती है। अगर आप यह कहें कि टिकट लेकर गाड़ी की छत पर क्यों बैठे हो तो यह वैसी बात हुई। यह भी हो सकता है बच्चों का आकर्षण उस रोज हो क्योंकि शुक्रवार था और स्कूलों से आए होंगे। छुट्टी होने से तत्काल कुतुब-मीनार भी देख लें और उसके

[लाडली मोहन निगम]

बाद मेला भी देख लें इस वास्ते भी सब कुछ हुआ होगा । असल बात यह है कि मानसिक उदासीनता है इन चीजों के लिए, उनके साथ हमारा कोई सम्बन्ध नहीं है। मैं आपसे निश्चित कहता हूं कि आप दुर्घटनाएं रोकना चाहते हैं लेकिन एक ही तो रुक जाती। हर शुक्रवार को आप ड्यूटी लगा दीजिए कि दिल्ली के किसी मन्त्री का बेटा उस रोज वहां रहेगा और पुलिस के आई जी का बेटा भी वहां रहेगा और वे भी चढ़ा उतरा करेंगे, कभी कोई दुर्घटना नहीं होगी, यह मैं आपसे कहता हूं । समाज के जो लोग पीड़ित होते हैं। मुफ्त को देखने कौन जायेगा, जिसको कोई सुविधा और दिनों की तरह से नहीं हो सकती। तो खैर, इस वास्ते कह करके उन दिनों की सुविधा को भी छीन लिया जाय यह मैं नहीं कह रहा हूं। मेरा आपसे इतना ही निवेदन है कि पुरातत्व विभाग ने जो आपको योजना दी है, अगर नहीं दी है तो पुरातत्व विभाग से इस बात का सर्टीफिकेट ले लेंगे।

वहां की, अन्दर की सीढ़ियां सात सौ वर्ष से चल रही हैं, सात सौ वर्ष में आदमी इतना चढ़ा है कि उसकी सीढ़ियां चिकनी नहीं हुई होंगी; इससे एक बात तो साफ जाहिर होती है कि जो भी इन्तजाम करने वाले लोग हैं वे सारे अपनी रोटी और अपनी मस्ती के लिए हैं। अन्दर क्या हो रहा है, चलता रहता है, पता नहीं देखते है कि नहीं देखते है? अगर ऐसी हालत है तो मैं समझता हूं कि कौन इसको सुधारेगा । अगर मैं अफसर हूं कहीं का और मैं मानूमेंट को, बिल्डिंग की हिफाजत नहीं करना चाहता, उसमें क्या हो रहा है उसके बारे में सूचना नहीं देना चाहता? कुछ लोगों से मैंने भी पूछा है, सब लोग कहते हैं हम लोग तो सब करके दिखा सकते हैं लेकिन इस विभाग को हमेशा लोगों ने दिखावे का विभाग समझ रखा है। समझते हैं कि इस पर पैसा फिजूल खर्च होता है। इस वास्ते मैं आपसे कहता हूं कि आपके पुरातत्व विभाग में, उसके साथ इतिहास में और उसके साथ जुड़ा हुआ जो अफसरवाद है इनके बीच में कहीं कोई समन्वय नहीं है।

उपसभापति महोदय, मैं एक चीज और कह देना चाहता हूं इसी के माध्यम से कि मन्त्रीजी की बात का मैं भरोसा करता हूं। मकवाणा जी ने कहा कि बयान रख लिये जायेंगे, टेप कर लिये जायेंगे। लेकिन एक बात याद रखिये, यह जो आपकी न्यायिक जांच बैठी है, उन दिनों जिन लोगों ने इण्टरव्यू दिया, जिनका आपने साक्ष्य दूरदर्शन वगैरह में दिया है, क्या उन साक्ष्यों को भी लिया जायेगा। उस रोज से लेकर गुजिश्ता शुक्रवार से लेकर आज तक विभिन्न अखबारों में जो कुछ बयान छपे हैं। कुछ तो लोगों के लेटर्स वेटर्स हैं एडीटर्स को और कुछ साधारण हैं, कुछ सम्पादकीय हैं, उनमें जो मुद्दे उठाये गये हैं, क्या आप उन मुद्दों को भी अपनी जांच में समाविष्ट करेंगे कि नहीं? उनको साक्ष्य के बतौर इस्तेमाल किया जायेगा कि नहीं? क्योंकि जब तक उपसभापति महोदय आम जनता को जो राय उसके साथ बनी है, अगर वह अदालत के समक्ष नहीं आती, जो भी आपकी अदालत है तो मैं समझता हूं कि अदालत के सामने सरकार ही अपना पक्ष दे, दूसरे न दे पायें तो यह अच्छी न्यायिक जांच नहीं होगी। तो यह दूसरी बात मैंने कही दूरदर्शन पर जिन्होंने वक्तव्य दिये, वे साक्ष्य के रूप में इस्तेमाल किये जांय। उनको बुलाइये, जिन लोगों ने इस मामले पर आपने दिल्ली के अखबारों में सम्पादकीय लिखे हैं या सम्पादकों के नाम पत्र लिखे हैं, उनको भी साक्ष्य के लिए बुलाइये।

इसमें बहस नहीं है, आपने कह दिया टेलीफोन से सूचना दे दी गई तो एफ आई आर में मानी जायेगी या नहीं मानी जायेगी।

मेरा आपसे इतना ही निवेदन है कि अगर घटना कहीं होती और मेरी आंखों के सामने घटना होती तो मैं टेलीफोन का सहारा लेता। तो इस मामले में पुलिस बगली मारने की कोशिश न करे। हमारे रोजनामचे में यह घटना इन्दराज नहीं की, इस वास्ते उसके समय का फायदा उठाकर जब हकीकत में रिपोर्ट एक लिखी गयी और टेलीफोन जब किया गया तो उन दोनों के अन्तराल को अलग समझा जाय, यह मैं आपसे चाहता हूं कि स्पष्ट जांच के लिए जरूरी है।

चौथी, एक आखिरी चीज कहकर खत्म करता हूं। उपसभापति महोदय, यहां के जितने सारे पुरातत्व के आपके मानुमेंट हैं, क्या आप ऐसा नहीं कर सकते—इस समय शर्माजी भी बैठे हुए हैं, जो पर्यटन के मन्त्री हैं तो सलानी मन्त्री और शिक्षा मन्त्री, दोनों बैठकर कुछ इस तरीके से बनायें कि जो सैलानी बसेज घुमाने के लिए चला करती हैं, सुबह शाम जिनका अलग अलग स्थान होता है, तो ऐसे समय जो बाहर के पर्यटक जाते हैं उनमें कहीं भीड़ न होने पाये कि एक ही वक्त में को कहीं 10 बसेज पहुंच जायें और कहीं एक भी न पहुंच पाय। तो इसकी कोई योजना क्या आप बनायेंगे कि दिल्ली के जितने ऐतिहासिक स्थल हैं, उनको घुमाने के लिए वे एक दूसरे से टकरायें नहीं और एक ही समय में कहीं ज्यादा से ज्यादा लोग न पहुंच पायें। इससे आपके समय की भी बचत होगी। इस वास्ते मैं आप से एक ही बात कहना चाहता हूं . . . (**व्यवधान**) राजन साहब मेरी बात का जवाब उनको दे दीजिए, वे पधारे हैं . . (**व्यवधान**) उपसभापति महोदय, एक ही सबसे जरूरी चीज जो है वह यह है कि मेरा आरोप है इस सरकार पर कि उसने जानबूझकर पिछले पांच सात वर्षों से उस इलाके के विकास को, उस इमारत की अन्दरूनी मरम्मत की जो योजनाएं थीं, उनको पूरा नहीं किया। आज यदि यह घटना घटी है, जैसे यदि आग लगी है, तो कुआं खोदने निकलते हैं, इसलिए यही नहीं, बल्कि देश में जहां जहां भी कुतुबें हैं और मीनारें हैं, वहां के पुरातत्व विभाग को जितने भी सुझाव आपके पास आए हैं, उन योजनाओं को कब तक आप कार्यान्वित करेंगे?

श्री उपसभापति : यह सुझाव तो कई लोगों का है।

श्रीमती शीला कौल : मान्यवर, निगम साहब की मैं बहुत मशकूर हूं। इन्हीं का एक वक्तव्य ऐसा है कि जिसमें इन्होंने मुझको एक सुझाव दिया है जिससे कि हमको भी मदद होगी और मुझे बड़ी खुशी है कि इस तरीके से उन्होंने इस विषय पर अपना ध्यान दिया—मैं और ज्यादा क्या कहूं।

श्री लाडली मोहन निगम : वह तो बता दिया। योजना तो बता दीजिए कम से कम।

श्री योगेन्द्र मकवाणा : योजना तो बनी नहीं है। जब बनेगी, तब ही बतायेंगी।

श्री लाडली मोहन निगम : आप पन्द्रह लाख की योजना कब पूरी करायेंगी? कब सीढ़ियां दुरुस्त करायेंगी? इतनी सी बात तो कह दीजिए?

श्रीमती शीला कौल : मैंने आपसे कहा कि वह जो काम है, अभी चारों तरफ से हो रहा है। इस वक्त थोड़ा सा ससपैण्ड किया हुआ है। जब अन्दर का हो जाएगा . . (**व्यवधान**)

श्री उपसभापति : काम शुरू हो गया है।

श्री लाडली मोहन निगम : यह घटना हो गई, बीच में अब रुक जाएगा? फिर शुरु हो जाएगा।

श्री योगेन्द्र मकवाणा : माननीय सदस्य ने पूछा है कि न्यायिक जांच में, यह जो सब बयान अखबारों में छपे हैं, उन लोगों को, जिन लोगों ने दूरदर्शन पर बयान दिया है उनको, जिन लोगों ने पत्र लिखा है, कालम लिखा है, उन सब का एविडेंस लिया जाएगा या नहीं, मैंने पहले ही जो इन्क्वायरी कमीशन की टर्म्स ग्राफ रेफरेंस बताई है, उसमें पहला जो टर्म्स ग्राफ रेफरेंस है to enquire into the circumstances leading to the tragedy resulting in the death of and injuries to a large number of persons on 4th December, 1981, at Qutab Minar. तो वह जो जाच करने वाले हैं, उसको तो यह सब उपयोगी होगा। इसलिए वह तो जांच कमीशन ही तय करेगा, मैं उसमें कुछ कह नहीं सकता।

श्री उपसभापति : लेकिन जब तक यह लोग वहां जाकर बयान नहीं देंगे . (**व्यवधान**) अखबारों में छपने से कुछ नहीं होगा। They cannot take notice of all these things. बयान देना होगा।

श्री योगेन्द्र मकवाणा : जिसको कहना है, वह तो दे। जो पढ़ा-लिखा होगा, वह तो ले लेंगे। लेकिन जिसको कहना है, वह तो जाकर बयान देगा, जाहिर है।

श्री उपसभापति : बयान उसका लिखा जाएगा।

श्री लाडली मोहन निगम : वे कह रहे है कि जो लिखा-पढ़ा है, उस पर ... (**व्यवधान**) निष्कर्ष निकालने के लिए ... (**व्यवधान**) अखबार पढ़ कर के हम यहां पर बहस करने के लिए बैठ गये।

श्री उपसभापति : अखबार लिखने वाले वहां जाएं।

श्री लाडली मोहन निगम : अखबार की बात नहीं। मैं कुछ और कह रहा हूं। उस रोज से अब तक जो कुछ लिखा गया है, जो अखबारों में आया है, उसे खोज के लिए इस्तेमाल करेंगे कि नहीं, यह मेरा सीधा सा प्रश्न है?

श्री उपसभापति : वह पेश नहीं करेगा, तो कैसे करेंगे।

श्री योगेन्द्र मकवाणा यह जो नोटीफिकेशन है, वह भी अखबार में छपा है और कहा गया है कि जिसके पास कुछ भी एविडेंस है, वह आ कर के बताएं, तो वह तो है ही।

दूसरी बात उन्होंने कही कि टेलीफोन पर इनफार्मेशन मिली, उसको टाल न दें। टेलीफोन पर जो इनफार्मेशन मिली है; वही फर्स्ट इनफार्मेशन है और जैसे मिलती है, उसको वैसे ही लिखा जाता है।

श्री उपसभापति : मिस्टर धाबे, बहुत संक्षेप में कहिये।

SHRI SHRIDHAR WASUDEO DHABE (Maharashtra): Sir, we are always brief. You always give us advice for nothing.

Mr. Deputy Chairman, Sir, it is a very unfortunate thing that, as it appears from the press reports, foreign women were molested. This is against the high traditions of our culture and our country.

SHRI YOGENDRA MAKWANA: I have already replied to that.

SHRI SHRIDHAR WASUDEO DHABE: I am not asking you, Mr. Minister.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: He is only expressing his view.

SHRI SHRIDHAR WASUDEO DHABE: The reasons are so obvious. It is the cumulative effect of the political atmosphere and other factors.

Therefore, it is very necessary to create confidence in the womanhood—because such incidents are becoming high not only here but incidents of rape, dowry-death etc. are also taking place in every part of the country—which can be prevented only by taking radical measures. The police should take strong action to maintain law and order and the rule of law should be enforced mercilessly. Sir, it is also stated that it was due to the *goonda* element that this tragedy had occurred. That is a matter for the judicial inquiry committee to find out and I quite agree with the hon. Minister that anybody who wants to give evidence can go there and give it there. There are two questions which I would like to put about this matter. It is stated by the Minister that on that day there were about 300 visitors only and after 60 persons came later on and there was a stampede. This does not seem to be correct because on the second page of her statement it is stated that the rules provide for the entry of about 300 persons in the first instance. In the press it has come that the rule is only for 100 persons and not 300 persons. If the same number was there on Friday, a tragedy of this ghastly nature cannot occur unless the rush was very great. I want to know from the Minister whether the regulation of entry is only for 100 persons or 300 persons as mentioned in the statement and whether it is a correct statement. Secondly, I find from the statement that on Fridays the entry is free to all and anybody can go. I want to know whether on that day also there was arrangement of staff or not to regulate entry, whether the same staff was there or more staff was there. If the entry is free, it requires more staff to strengthen the arrangement and restrict entry there. The other point is, power failure is the order of the day in Delhi and other places of the country. It is nothing new. But I want to know whether you have got any arrangement at present for emergency lighting at the Qutab Minar or there is no such arrangement at present. Lastly, entry regulations should be strictly enforced. Immediately this Minar should be made open to the public, but entry should be regulated properly.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: You cannot ask for both the things—to get it repaired and then have it opened.

SHRI SHRIDHAR WASUDEO DHABE: I am not saying about repairs. I am saying that entry should be restricted, even to 50 persons at a time. But it will be wrong to say that we are going to close the entry for maintenance and repairs. Repairs and maintenance can be made but the regulations for entry can be enforced so that only a small number of people can go. Therefore, I would like to know specifically on this point.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Honourable Minister, I think you have replied to all the points. If there is anything new, you may say it.

श्रीमती शीला कौल : मान्यवर, माननीय धाबे जी जो बात पूछ रहे हैं उसका जवाब दे चुकी हूं ।

SHRI SHRIDHAR WASUDEO DHABE: I asked about regulation of entry, whether on Fridays it is 100 persons or 300 persons, whether the present rule provides for the entry of 100 or 300 persons.

SHRIMATI SHEILA KAUL: In the beginning if there are 300 people they can go up and then, out of those 300-odd if some people come down, say, about 100, then only a hundred will be allowed to go up. This is the regulation.

श्री सैयद अहमद हाशमी: सर, यह जो कुतुब मीनार में हादसा हुआ है 4 दिसम्बर को, उस के ऊपर मैं अपने दिले दर्द और रंजे-गम का इजहार करता हूं। मैं सोचता हूं, सिर्फ एक मैं ही नहीं बल्कि पूरा हिन्दुस्तान इस गम में शरीक है। इसी तरीके से आज की जो दूसरी खबर अहमदाबाद के सिलसिले में आई है,

[श्री सैयद अहमद हाशमी]

जिस में 63 आदमी शिकार हुए हैं आग से वह भी एक दर्दनाक वाक़या है।

श्री उपसभापति : वह एक अलग प्रश्न है।

श्री सैयद अहमद हाशमी : मैं एक बात यह अर्ज करना चाहता हूं मिस्टर डिपुटी चैयरमैन, कि जुडिशल इन्क्वायरी कुतुब मीनार के हादशे की शुरु हो गई है। ठीक है, हो गई है लेकिन आज तक, पूरे मुल्क में बहुत से मुतआद्दिद वाक़यात में होता यही है कि फार द टाइम बीइंग लोगों का गुस्सा दूर करने के लिये इंक्वायरी कमीशन अपोइंट कर दिया जाता है लेकिन उस के बाद जो उन की फाइंडिग्ज़ आती है उन फाइंडिग्ज पर अमल होता नहीं है। मैं समझता हूं, ठीक है यह जुडीशल इंन्क्वायरी हो रही है लेकिन एक बिलकुल टेक्निकल बात है, टेक्निकल इसका प्रोसीजर पूरा हो जायगा लेकिन दो-तीन चीजें इस जुडिशल इंक्वायरी में भी ग़ालिबन आएंगी और वह हैं एक तो क्या आर्कियालाजिकल डिपार्टमेन्ट ने या उसके स्टाफ ने अपनी ड्यूटी अपने फर्ज को पूरा किया। दूसरा मसला जो आता है वह यह कि डेसू का फर्ज है जो पावर की बाबत था उस ने अपनी ड्यूटी पूरी की या उस के अंदर बीच में कोई दूसरा इंटरवीन करने वाला था, कोई मदाख़लतकार था जिसने स्विच आफ किया ?

दूसरी चीज यह कि क्या वाक़ई सिर्फ बिजली बंद हो जाने के नतीजे में यह हादसा हुआ ? मैं समझता हूं कि सिर्फ बिजली बन्द हो जाने की वजह से ही ऐसा नहीं हुआ। बात यही कहीं जाती है कि फ्राइडे को, जिस रोज फ्री एन्ट्री होती है, और दिनों के मुकाबले में जब पैसे से टिकट ले कर जाते हैं, कम स्टाफ होता है। एक तरह से यह कहा जाय कि जिस रोज पैसे मिलते हैं उस रोज प्रोटेक्शन का ज्यादा लिहाज होता है लेकिन जिस रोज फ्री एंट्री होती है उस रोज प्रोटेक्शन का इंतजाम करने की जहमत नहीं उठायी जाती, उस रोज एक आध ही स्टाफ रहता है। मैं यह भी मान लेता हूं कि फ्री एंट्री का दिन था, ट्रेड-फेयर का भी आखिरी दिन था, उस दिन देखने के लिये स्कूल के बच्चे आये, वहां से वहां गये, बहुत ज्यादा भीड़ थी। मैं कहता हूं कि अगर नार्मल सिचुएशन रहती तो बाज आती और चली जाती। भीड़ दोस्तों ने कहा कि बिजली का जमाना आज का जमाना है, लेकिन कुतुबमीनार तो सात सौ बरस से है, उस के अन्दर रोशनदान बने हुए हैं जिन से रोशनी और हवा आती है अगर बिजली चली भी जाय तो कोई खास बात नहीं। हादसे की बात यही है कि आज पिकनिक स्पाट गुंडा अनासर का मरकज बने हुए हैं और उन से कुतुब भी महफूज़ नहीं है। यह बात बिलकुल सही और यकीनी है कि कुछ समाज-दुश्मन अनासर, कुछ बैड एलीमेंट्स, कुछ गुण्डे जरूर कुतुबमीनार के अन्दर गये और उन्होंने चाहे फारेन गर्ल्स हों, या हमारे अपने वतन की बहुएं हमारी मायें और बहिनें ही लेकिन यह जरूर है कि हमारा सिर ज्यादा शर्म से झुक जाता है जब गैरमुल्की मां-बहिनों का नाम आता है--यकीन है कि उन्होंने उन के साथ शरारत की, उन्होंने उन के साथ बदमाशी की और उस के नतीजे में वह चीखीं। एक तरफ उन्होंने बिजली बुझाई या बिजली गुल हुई, दोनों शक्लों के अन्दर भगदड़ मची, बदहवासी पैदा हुई और उस बदहवासी के नतीजे के अन्दर यह हादसा हुआ। अब यहां पर एक बात मैं और भी अर्ज कर दूं। जाहिर

है कि हम आज उन मरने वालों के लिये कुछ कर नहीं सकते । हो सकता है कि मिनिस्ट्री आफ एजूकेशन उन की फैमिलीज को कुछ इमदाद करे। गालिबन 500 रुपये की फिगर आयी है ।

एक माननीय सदस्य : 5 हजार।

श्री सैयद अहमद हाशमी : होगी, लेकिन मैं यह कहना चाह रहा था कि जब कोई हादसा होता है उस वक्त हम जायजा लेते हैं, उस वक्त देखते है कि यह सही है या गलत है । मैं कहता हूं कि यह कन्वेंशन खतम होना चाहिए। हमें पहले से सावधान रहना चाहिये, पहले से होशियार रहना चाहिये कि आइंदा इस तरह की घटनाएं न घटें।

इसके साथ एक बात और जोड़ूंगा। आज अखबारों में जो रिपोर्ट है उस के मुताबिक जो जज हैं मिस्टर जगदीश चन्द्र वह मिस्टर बलवन्त सिंह, डिपुटी कमिश्नर पुलिस के साथ गये लेकिन आर्क्यौलोजिकल डिपार्टमेंट का जो स्टाफ वहां होना चाहिये चौकीदार, हवलदार वे भी वहां नहीं पाये गय। यानी जुम्मा के रोज जो लोग मौका पर थे उनमें से कोई भी नहीं था ।

श्री उपसभापति : उस का जवाब हो गया है ।

श्री सैयद अहमद हाशमी : मैं आगे बता रहा हूं । यही नहीं बल्कि लोकल इंटेलीजेंस जो इनवेस्टीगेट कर रहा है उस ने लोदी रोड और अरविन्द मार्ग की क्रासिंग पर रहने वाला जो स्टाफ है, जो वहां पर बूथ वगैरह लगाते हैं उन से इनक्वायरी की । मालूम होता है कि उन के मुंह को सी दिया गया है और वह कोई बात कहने के लिये तैयार नहीं है । यह सूरतेहाल बहुत तसबीसनाक है । अगर आर्क्यौलोजिकल डिपार्टमेंन्ट का कोआपरेशन किसी डर का दबाव की वजह से नहीं आता और सही फैक्ट्स और फिगर्स नहीं आते तो मैं समझता हूं कि बहुत बड़ी भूल होगी। मैं फिर कहूंगा कि यह कन्वेंशन बदलना चाहिय कि जब घटना घटे तभी हमारा मिनिस्टर कहे कि हम पूरी सिचुएशन पर गौर करेंगे ।

†[شری سید احمد ہاشمی : سر یہ جو قطب مینار میں حادثہ ہوا ہے ۴ دسمبر کو اس کے اوپر میں اپنے دلی درد اور رنج و غم کا اظہار کرتا ہوں - میں سوچتا ہوں کہ صرف ایک میں ہی نہیں بلکہ پورا ہندوستان اس غم میں شریک ہے - اسی طریقہ سے آج کی جو دوسری خبر احمد آباد کے سلسلے میں آئی ہے جس میں ۶۳ آدمی شکار ہوئے ہیں آگ سے - وہ بھی ایک درد ناک واقعہ ہے -

شری اپسبھاپتی : وہ ایک الگ چیز ہے -

شری سید احمد ہاشمی : میں ایک بات یہ عرض کرنا چاہتا ہوں - مسٹر ڈپٹی چیئرمین کہ جوڈیشل انکوائری قطب مینار کے حادثہ کی شروع ہو گئی ہے - ٹھیک ہے ہو گئی ہے - لیکن آج تک پورے ملک میں بہت سے متعدد واقعات میں ہوتا بھی ہے کہ فار دی ٹائم بیئنگ لوگوں کا غصہ دور کرنے کے لئے انکوائری

*[ ]Transliteration in Persian Script.

[شری سید احمد هاشمی]

کمیشن اپائنٹ کر دیا جاتا ہے - لیکن اس کے بعد جو ان کی فائنڈنگ آتی ہے - ان فائنڈنگز پر عمل ہوتا نہیں ہے - میں کہتا ہوں کہ ٹھیک ہے یہ جوڈیشل انکوائری ہو رہی ہے - لیکن ایک بالکل ٹیکنیکل بات ہے - ٹیکنیکل اس کا پروسیجر پورا ہو جائے گا - لیکن دو تین چیزیں اس جوڈیشل انکوائری میں بھی غالباً آئیں گی - اور وہ ہیں—ایک تو—کیا آرکیولوجیکل ڈیپارٹمینٹ نے یا اس کے اسٹاف نے اپنی ڈیوٹی - اپنے فرض کو پورا کیا - دوسرا مسئلہ جو آتا ہے وہ یہ ہے کہ ڈیسو کا فرض جو پاور کی بابت تھا اس نے اپنی ڈیوٹی پوری کی یا اس کے اندر بیچ میں کوئی دوسرا انٹروین کرنے والا تھا - کوئی مداخلت کار تھا جس نے سوئچ آف کیا -

دوسری چیز یہ ہے کہ کیا واقعی صرف بجلی بند ہو جانے کے نتیجہ میں یہ حادثہ ہوا - میں سمجھتا ہوں کہ صرف بجلی بند ہو جانے کی وجہ سے ہی ایسا نہیں ہوا - بات یہی کہی جاتی ہے کہ فرائی ڈے کو جس روز فری اینٹری ہوتی ہے اور دنوں کے مقابلے میں جب پیسے سے ٹکٹ لیکر جاتے ہیں کم اسٹاف ہوتا ہے - ایک طرح سے یہ کہا جائے کہ جس روز پیسے ملتے ہیں اس روز پروٹیکشن کا زیادہ لحاظ ہوتا ہے - لیکن جس روز فری اینٹری ہوتی ہے اس روز پروٹیکشن کا انتظام کرنے کی زحمت نہیں اٹھائی جاتی - اس روز ایک آدھ ہی اسٹاف رہتا ہے - میں یہ بھی مان لیتا ہوں کہ فری اینٹری کا دن تھا - ٹریڈ فیر کا بھی آخری دن تھا - اس دن دیکھنے کے لئے اسکول کے بچے آئے، وہاں سے وہاں گئے بہت زیادہ بھیڑ تھی - میں کہتا ہوں کہ اگر نارمل سچویشن رہتی تو بھیڑ آتی اور چلی جاتی - بعض دوستوں نے کہا کہ بجلی کا زمانہ آج کا زمانہ ہے - لیکن قطب مینار تو سات سو برس سے ہے - اس کے اندر روشن دان بنے ہوئے ہیں - جس سے روشنی اور ہوا آتی ہے اگر بجلی چلی بھی جائے - تو کوئی خاص بات نہیں - حادثہ کی بات یہی ہے کہ آج پکنک اسپاٹ فتنہ عناصر کا مرکز بنے ہوئے ہیں اور ان سے قطب بھی محفوظ نہیں ہے - یہ بات بالکل صحیح اور یقینی ہے کہ کچھ سماج دشمن عناصر - کچھ بیڈ ایلیمینٹس - کچھ غنڈے ضرور قطب مینار کے اندر گئے اور انہوں نے چاہے فورن گرلز ہوں، یا ہمارے اپنے وطن کی بہویں ہماری مائیں بہنیں

ہوں - لیکن یہ ڈر ہے کہ ہمارا سر زیادہ شرم سے جھک جاتا ہے جب غیر ملکی ماں بہنوں کا نام آتا ہے - یقین ہے کہ انہوں نے ان کے ساتھ شرارت کی - انہوں نے ان کے ساتھ بدمعاشی کی اور اس کے نتیجہ میں وہ چیخیں - ایک طرف انہوں نے بجلی بجھائی یا بجلی گل ہوئی - دونوں شکلوں کے اندر بھگدڑ مچی - بد حواسی پیدا ہوئی اور اس بد حواسی کے نتیجہ کے اندر یہ حادثہ ہوا - اب یہاں پر ایک بات میں اور بھی عرض کر دوں - ظاہر ہے کہ ہم آج ان مرنے والوں کے لئے کچھ کر نہیں سکتے - ہو سکتا ہے کہ منسٹری آف ایجوکیشن ان کی فیملیز کی کچھ امداد کرے - غالباً پانچ سو روپیہ کی فگر آئی ہے -

ایک ماننیے سدسیہ : پانچ ہزار ہ

شری سید احمد ہاشمی : ہوگی - لیکن میں یہ کہنے جا رہا تھا کہ جب کوئی حادثہ ہوتا ہے اس وقت ہم جائزہ لیتے ہیں - اس وقت دیکھتے ہیں کہ یہ صحیح ہے یا غلط ہے - میں کہتا ہوں کہ یہ کنوینشن ختم ہونا چاہئے - ہمیں پہلے سے ساودھان رہنا چاہئے - پہلے سے ہوشیار رہنا چاہئے کہ آئندہ اس طرح کی گھٹنائیں نہ گھٹیں ۔

اس کے ساتھ ایک بات اور جوڑوں گا - آج اخباروں میں جو رپورٹ ہے اس کے مطابق جو جج ہیں مسٹر جگدیش چندر و مسٹر بلونت سنگھ ڈپٹی کمشنر پولس کے ساتھ گئے - لیکن آرکیو لوجیکل ڈپارٹمینٹ کا جو اسٹاف وہاں ہونا چاہئے چوکیدار ، حولدار - وہ ابھی وہاں نہیں پائے گئے - یعنی جمعہ کے روز جو لوگ موقعہ پر تھے ان میں سے کوئی بھی نہیں تھا -

شری اُپسبھا پتی : اس کا جواب ہو گیا ہے -

شری سید احمد ہاشمی : میں آگے بتا رہا ہوں - یہی نہیں بلکہ لوکل انٹیلی جینس جو انویسٹیگیشن کر رہا ہے اس نے لودی روڈ اور اروند مارگ کی کراسنگ پر رہنے والا جو اسٹاف ہے جو وہاں پر بوتھ وغیرہ لگاتے ہیں ان سے انکوائری کی - معلوم ہوتا ہے کہ ان کے منہہ کو سی دیا گیا ہے اور وہ کوئی بات کہنے کے لئے تیار نہیں ہیں - یہ یہ صورت حال بہت تشویشناک ہے - اگر آرکیولوجیکل ڈیپارٹمینٹ کا کوآپریشن کسی ڈر یا دباؤ کی وجہ سے نہیں آتا اور صحیح فیکٹس

[شری سید احمد ہاشمی]

اور فیگرس نہیں آئے تو میں سمجھتا ہوں کہ بہت بڑی بھول ہوئی - میں پھر کہونگا کہ یہ کنڈیشن بدلنا چاہئے کہ جب کوئی کھلے تبھی ہمارا ماسٹر کہے کہ ہم پوری سچوایشن پر غور کرینگے -]

श्री उपसभापति : इन सब बातों पर इन्क्वारी हो रही है ।

3 P. M.

श्री सैयद अहमद हाशमी : आप ही जवाब न दीजिए । आप ही जवाब देंगे मिनिस्टर क होते हुए तब हम आप को ही सुन लेंगे ।

†[شری سید احمد ہاشمی : آپ ہی جواب نہ دیجئے - آپ ہی جواب دینگے منسٹر کے ہوتے ہوئے تو ہم آپ کو ہی سن لیں گے -]

श्रीमती शीला कौल : जनाब हाशमी साहब ने जो फरमाया कि अरविन्द रोड पर जो कुछ हो रहा था वह यह है कि अरविन्द रोड पर यहां का दफ्तर है । तो वहां पर जब यह हादसा हुआ तो कुछ लोग मिल कर उस के बारे में बात कर रहे थे कि देखो क्या हो गया । अफसोस की बात है । जसे यह पार्लियामेंट का दफ्तर है उसी तरह वहां दफ्तर है और उस के बाहर खड़े हो कर लोग बात कर रहे थे और कोई खास बात नहीं है ।

श्री सैयद अहमद हाशमी : मकवाणा साहब इस के बारे में कुछ नहीं फरमायेंगे ?

†[شری سید احمد ہاشمی : مکوانہ صاحب تو اس کے بارے میں کچھ نہیں فرمائیں گے -]

†[ ] Transliteration in Arabic Script.

श्री उपसभापति : इससब बारे में बात तो हो रही है ।

श्री योगेन्द्र शर्मा (बिहार) : कुतुब की ट्रेजडी से जो देश और हम सब लोगों की हालत हुई है उस के बाद उम्मीद यह की जाती थी कि कुतुब मीनार को देखने वालों की रक्षा की जिम्मेदारी जिन लोगों पर है वे सिर्फ संवेदना ही प्रकट नहीं करेंगे बल्कि कुछ प्रायश्चित की भावना का भी इजहार करेंगे ताकि इस तरह की घटनायें दुहरायी न जायें और इस तरह की चीजों के होने में उन लोगों का हाथ जाने या अनजाने हो तो उस का भी प्रायश्चित हो जाय, लेकिन इस के विपरीत देखा यह जा रहा है कि सब लोग अपनी-अपनी चमड़ी बचाना चाहते हैं । हम ऐसे नहीं थे, बिजली वहां नहीं थी, हम इतने समय में वहां पहुंच गये थे, आदि-आदि बातों से ऐसा मालूम होता है कि सब अपनी-अपनी चमड़ी बचाना चाहते हैं । एसा नहीं मालूम होता कि इस दुर्घटना से हमारा दिल कहीं ठुकराया गया है जिस से हम को प्रायश्चित हो ।

मान्यवर, मैं मंत्री महोदय से यह जानना चाहता हूं कि शुक्रवार को वहां अधिक दर्शक जाते हैं । क्या उस दिन मीनार पर दर्शकों की रक्षा करने का कोई विशेष प्रबंध किया जाता है और यदि उस दिन कोई विशेष प्रबंध नहीं किया जाता है तो क्यों नहीं किया जाता है । क्योंकि यह बात सब को मालूम है कि निःशुल्क प्रवेश का जो भी दिन होता है उस दिन दर्शक ज्यादा जाते हैं और चूंकि दर्शक ज्यादा जाते हैं इस लिए उन की रक्षा की जिम्मेदारी भी अधिक हो जाती है । तो पहले मैं जानना चाहता हूं कि क्या प्रबंध किया जाता है और यदि नहीं किया जाता है तो क्यों नहीं किया जाता है । दूसरे

शुक्रवार की बिना टिकट की प्रथा क्यों ? और यह टिकट की प्रथा कब चालू की गयी ? हम ऐसी ऐतिहासिक जगहों की बात तो समझ सकते हैं कि जो प्रार्थना की जगहें हीं खास कर शुक्रवार को जहां प्रार्थना की जाती हो, जैसे मस्जिदें हैं । वहां जाने के लिए फ्री पास की बात तो समझ में आ सकती है लेकिन मीनार में तो कोई मस्जिद नहीं है । तो वहां के लिए शुक्रवार को निःशुल्क प्रवश का प्रथा क्यों चालू की गयी और क्या यह चालू रहेगी ?

तीसरी बात जो मैं जानना चाहता हूं वह यह है कि सांस्कृतिक और ऐतिहासिक महत्व के स्थानों और भवनों के रख-रखाव और वहां पर जाने वाले दर्शकों की रक्षा का क्या कोई विशेष प्रबंध अब से किया जायगा ? और आखिरी बात, अखबारों से मालूम होता है कि जो स्टपीड हुआ उस में लोग मरे और क्या-क्या चीजे हुई उन का पता तो, जब कमीशन की रिपोर्ट आयेगी तब चलेगा, तब सारी बातें मालूम होंगी लेकिन एक बात मालूम होती है । कि बहुत से लोगों की चीजें और उन का बहुत सा सामान लोगों ने फेंक दिया या फेंका गया । तो उन के बारे में मंत्री जी देश कुछ बतला सकते हैं कि कितना सामान वहां बरामद हुआ और किस तरह का सामान बरामद हुआ है ? और आखिरी बात क्या सरकार वहां पर सीढ़ियों की मरम्मत करेगी और वहां रेलिंग लगायेगी और गुंडों से हिफाजत वहां पर लोगों की करेगी ? इस के बारे मे सरकार क्या सोचती है ?

श्रीमती शीला कौल : मान्यवर हमारे माननीय सदस्य ने अभी पूछा है कि यह टिकट कब से लगे और क्यों लगे और फ्राइडे के दिन क्यों नहीं लगते हैं । तो इस के बारे में बताना चाहती हूं कि यह जो टिकट हैं यह शुरू में 1959 में लगे और तब उन का दाम 20 पैसा था । फिर दस साल के बाद उन की कीमत 50 पैसे हो गयी दिसम्बर से । यह उन्ही लोगों के लिए लगता है जो 15 साल से ऊपर की उम्र के होते हैं । यह हर म्यूजियम में किया जाता है । मैं तो इस चीज में बहुत लगी रही हूं । हमारे यहां यह होता है कि म्यूजियम में एक दिन फ्री रहता है । ऐसे वर्ग के लोग जो टिकट खरीद नहीं सकते, जिनके लिए 8 आने भी बड़े माने रखते हैं, उन लोगों के लिए फ्री इसलिए रखा है कि वह बगैर पैसे दिए वहां जा सकें और देख सकें ।

सामान का आपने जिक्र किया है । मैंने देखा इतना सारा सामान था जो कि बाहर पड़ा हुआ था । उसमें चप्पलें थी, कुछ कपड़े थे, कुछ किताबें थी । हमने खोल-खोलकर तो नहीं देखा लेकिन जैसा मैंने देखा यह आपको बता रही हूं कि उनमें कुछ किताबें, कुछ कपड़े फटे हुए और चप्पलें थीं ।

श्री योगेन्द्र शर्मा : मान्यवर, जिस दिन निःशुल्क प्रवेश होता है क्या उस दिन विशेष प्रबंध रहता है दर्शकों की हिफ़ाजत के लिए, दर्शनीय स्थानों की हिफ़ाजत के लिए, यह मैंने पूछा था ।

श्रीमती शीला कौल : इसके बारे में मैं पूछकर बता सकती हूं कि कितना स्टाफ वहां रहता है ।

श्री सैयद रहमत अली (आंध्र प्रदेश) : जनाब डिप्टी चेयरमैन साहब, कुतुब के बदबख्ताना हादसे के बारे में

[श्री सैयद रहमत अली]

आज इस हाउस में जो मुख्तलिफ़ मुअज्जिज अरकान के ख्यालात को सुनने का मौका मिला तो मैं उनके ख्यालात के बारे में सिर्फ यह बात कह सकता हूं कि हम कुछ ठोस किस्म की जानकारी हासिल करके इस हाउस में बात करते तो ज्यादा मुनासिब था । बात यहां यह कही गई कि बदअखलाकी का मुज़ाहिरा गुण्डागर्दी का मुज़ाहिरा, बैरूने मुल्कों से आई हुई लेडीज के साथ हिन्दुस्तान के बच्चों ने किया, इससे हमारा सिर शर्म से झुक जाता है। इसके बारे में मैं यह बात अर्ज करना चाहता हूं कि इस रोज जो बदवख्ताना हादसा हुआ, उस हादसे में मेरा लड़का अजमत सलीम और मेरा भानजा अमीन शहजाद दोनों भी गये हुए थे। अमीन शहजाद कुतुब की सीढ़ियों पर ऊपर जब चढ़ने लगा तो मेरे बच्चे ने यह बात कही कि ऊपर जाना मुनासब नहीं है । मेरा बच्चा नीचे ही रुक गया लेकिन मेरा भानजा ऊपर चढ़ा हुआ था । मैं बताऊं कि जो भगदड़ मची, उस भगदड़ में—मेरे बच्चे का कद कुछ ज्यादा लम्बा है, एक लड़की का हाथ उसके गले पर आ गया । तो क्या यह बात कही जा सकती है कि मेरे भानजे को किसी लड़की ने छेड़ा ? अगर भगदड़ में किसी लड़की का हाथ किसी के गले में लग जाए और उछल-कूद में किसी के कपडे निकल जायें तो उसका हिन्दुस्तान की बदअखलाकी का मुजाहिरा करार देने वाले बुजुर्ग से मैं दरख्वास्त करना चाहता हूं कि खुदारा हिन्दुस्तान को बदनाम करने से बचाइये। एक मैम्बर ने यह बात भी कही कि हिन्दुस्तान की तहजीब की किस्मरदगी कुतुब पर की गई । 'कुछ न समझे खुदा करे कोई', अगर हमारा यह अन्दाजे फिक्र है तो बहुत गलत है । मैं पूरी जिम्मेदारी के साथ इस हाउस के रुक्न की हैसियत से यह बात कहना चाहता हूं कि मेरा बच्चा पहला बच्चा है अजमत जिसने पुलिस और फायर सर्विसिज को फोन किया वहां के गैस्ट हाउस से । फोन के 15–18 मिनट के बाद पुलिस वहां पर आई ? यह बात सही है कि वहा एक चौकीदार नीचे मौजूद था । जो मेरा बच्चा दबाव में फंसा हुआ था उसका कहना यह था कि लोग सफ़ोकेशन की वजह से गिरकर जो उसके कदमों की तरफ आ रहे थे तो उसके पांव झुक गये थे, लेकिन अपनी ऊंचाई की वजह से वह सांस ले सका । लाइट पहले ही से कुतुब मीनार में मौजूद नहीं थी । किसी तरह की गुण्डागर्दी का मुज़ाहिरा हिन्दुस्तान की इस कतुब मीनार के इस बदवख्ताना हादसे में नहीं हुआ । इसकी जानकारी पूरी तरह से की जा सकती है। लोगों की चप्पलें छूटीं । मैं खुद यह बात कहूं तो बेजा न समझा जाए की मेरे भानजे का पेंट नीचे उतर गया । क्या आप कहेंगे कि उसकी पेंट किसी ने खींची ? अगर किसी खातून, किसी लड़की की साड़ी या कपड़े उतरे हैं तो उस भगदड़ में उतरे हैं । जहां पर हिन्दुस्तान के नौजवानों को या उस दिन जो लोग कुतब पर मौजूद थे उन पर इल्जाम लगाना गलत है । 15 वर्ष के, 16 वर्ष के, 18 वर्ष के और कुछ बुजुर्ग भी वहां थे लेकिन हर बात को सरकार का निकम्मापन करार देना

मैं इस जहन के दिवालियेपन पर कुछ नहीं कह सकता हूं ।

†[شری سید رحمت علی (آندھرا پردیش): جناب ڈپٹی چیرمین صاحب قطب کے بارے میں آج اس ہاوس میں مختلف معزز ممبران کے خیالات کو سننے کا موقع ملا تو میں ان کے خیالات کے بارے میں صرف یہ بات کہہ سکتا ہوں کہ ہم کچھ ٹھوس قسم کی جانکاری حاصل کرکے اس ہاوس میں بات کرتے تو زیادہ مناسب تھا ۔ بات یہاں یہ کہی گئی کہ بد اخلاقی کا مظاہرہ - غلط کردیں کا مظاہرہ - بیرون ملک سے آئی ہوئی تہذیب کے ساتھ ہندوستان کے بچوں نے کیا - اس سے ہمارا سر شرم سے جھک جاتا ہے - اس کے بارے میں یہ بات عرض کرنا چاہتا ہوں کہ اس روز جو بد بختانہ حادثہ ہوا اس حادثہ میں میرا لڑکا عظمت سلیم اور میرا بھانجا امین شہزاد دونوں ہی گئے ہوئے تھے - امین شہزاد قطب کی سیڑھیوں پر اوپر چڑھنے لگا تو میرے بچے نے یہ بات کہی کہ اوپر جانا مناسب نہیں ہے - میرا بچہ نیچے ہی رک گیا لیکن میرا بھانجا اوپر چڑھا ہوا تھا - میں بتاؤں کہ جو بھگدڑ مچی اس بھگدڑ میں میرے بچے کا قد کچھ زیادہ لمبا ہے - ایک لڑکی کا ہاتھ اس کے گلے پر آ گیا تو کیا یہ بات کہی جا سکتی ہے کہ میرے بھانجے کو کسی لڑکی نے چھیڑا - اگر بھگدڑ میں کسی لڑکی کا ہاتھ کسی کے گلے میں لگ جائے - اور اچھل کود میں کسی کے کپڑے نکل جائیں تو اس کو ہندوستان کی بد اخلاقی کا مظاہرہ قرار دینے والے بزرگوں سے میں درخواست کرنا چاہتا ہوں کہ خدارا ہندوستان کو بدنام کرنے سے بچائیے - ایک ممبر نے یہ بات بھی کہی کہ ہندوستان کی تہذیب کی عصمت دری قطب مینار پر کی گئی — کچھ نہ سمجھے خدا کرے کوئی — اگر ہمارا یہ انداز فکر ہے تو بہت غلط ہے - میں پوری ذمہ داری کے ساتھ اس ہاوس کے رکن کی حیثیت سے یہ بات کہنا چاہتا ہوں کہ میرا بچہ پہلا بچہ ہے عظمت جس نے پولیس اور فائر سروس کو فون کیا وہاں کے گیسٹ ہاوس سے - فون کے 15—18 منٹ کے بعد پولیس وہاں پر آئی - یہ بات صحیح ہے کہ وہاں ایک چوکیدار موجود تھا - جو میرا بچہ دباؤ

†[ ] Transliteration in Arabic Script.

[شری سید رحمت علی]

میں پھنسا ہوا تھا اس کا کہنا یہ تھا کہ لوگ سفوکیشن کی وجہ سے گر کر جب اس نے قدموں کی طرف آ رہے تھے تو اس کے پاؤں جھک گئے تھے - لیکن اپنی اونچائی کی وجہ سے وہ سانس لے سکا - لائٹ پہلے ہی سے قطب مینار میں موجود نہیں تھی - کسی طرح کی غنڈہ گردی کا مظاہرہ ہندوستان کی اس قطب مینار کے اس بد بختانہ حادثہ میں نہیں ہوا - اس کی جانکاری پوری طرح سے کی جا سکتی ہے - لوگوں کی چپلیں چھوٹیں - میں خود یہ بات کہوں تو بے جا نہ سمجھی جائے کہ میرے بھانجے کا پینٹ نیچے اتر گیا - کیا آپ کہیں گے کہ اس کی پینٹ کسی نے کھینچی - اگر کسی خاتون کسی لڑکی کی ساڑی یا کپڑے اترے ہیں تو اس بھگدڑ میں اترے ہیں - یہاں پر ہندوستان کے نوجوانوں کو یا اس دن جو لوگ قطب پر موجود تھے ان پر الزام لگانا غلط ہے - پندرہ ورش کے - سولہ ورش کے - اٹھارہ ورش کے اور کچھ بزرگ بھی وہاں تھے لیکن ہر بات کو سرکار کا نکماپن قرار دینا - میں اس ذہن کے دیوالیہ پن پر کچھ نہیں کہہ سکتا ہوں -]

श्री उपसभापति : अब इस पर बहस की जरूरत नहीं। स्पेशल मेंशन, श्री कलराज मिश्र।

REFERENCE TO THE REPORTED DEVASTATING FIRE DUE TO AN ELECTRIC SHORT CIRCUIT IN AHMEDABAD, RESULTING IN THE DEATH OF 49 PERSONS—contd.

श्री कलराज मिश्र (उत्तर प्रदेश) : अभी कुतुब की दुखद दुर्घटना के बारे में चर्चा हो रही थी। मैं अपनी तरफ से संवेदना प्रकट करना चाहता हूं। अहमदाबाद में आग लग जाने के कारण, जो हिमालय का एक प्रारूप बनाया गया था उसमें दर्शन करने वाले दर्शनार्थियों की मृत्यु हो गई। इस अखबार में तो लिखा हुआ है कि 49 लोग मरे हैं लेकिन 50 से भी अधिक मरे होंगे सैकड़ों की भी संख्या हो सकती है? दुर्घटनाओं का ऐसा ताता लगा हुआ है जिससे लगता है कि इसके पीछे कोई रहस्य है हिमालय के दर्शन के लिये जो लोग गये हुए थे वह हिमालय के प्रारूप को देखने के लिये गये हुए थे और वह हिमालय का प्रारूप लकड़ी और कागज का था। बीस मीटर ऊंचा था।

SHRI YOGENDRA MAKWANA: The Chairman has directed me to make a statement on this tomorrow. Why is he raising it now?

श्री कलराज मिश्र : क्योंकि स्पेशल मेंशन स्वीकार किया गया है इसलिये मैं अपनी बात कह रहा हूं।

MR. DEPUTY CHAIRMAN: He has been allowed a Special Mention before that.

न

श्री कलराज मिश्र : मैं इसलिये निवेदन करना चाहता हूं कि समाचार पत्रों के